Training Moduel=PART-I_Edited.qxd 12/16/2013 3:04 PM Page 1

प्रयास

विशेष प्रशिक्षण केन्द्र के उपयोग हेतु

शिक्षक प्रशिक्षण संदर्शिका

भाग-1

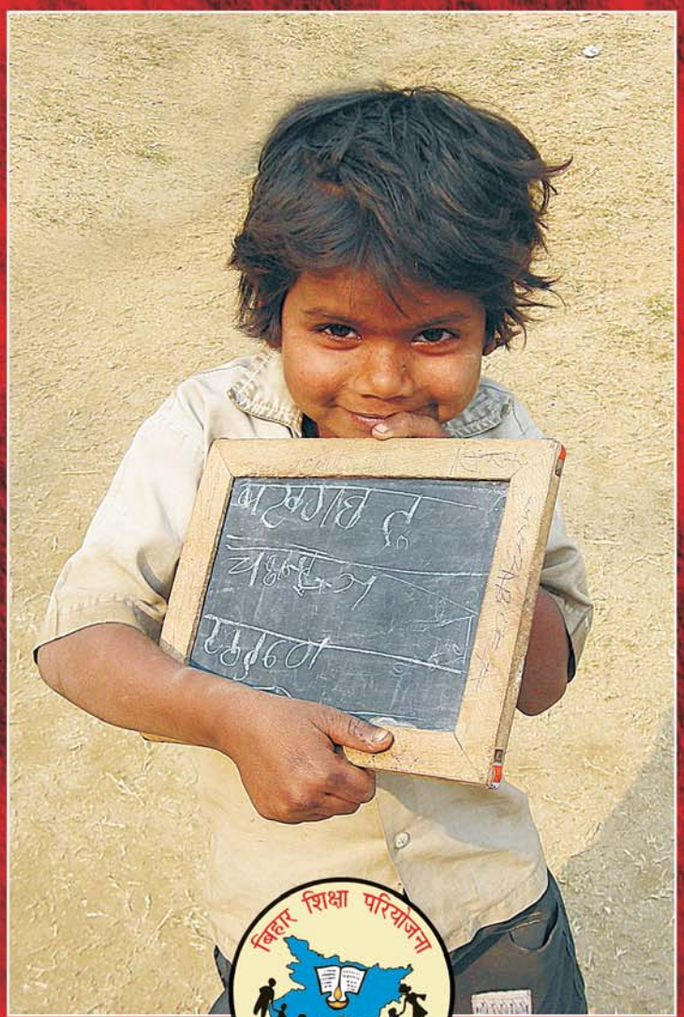

बिहार शिक्षा परियोजना परिषद

शिक्षा भवन, राष्ट्रभाषा परिषद् परिसर, सैदपुर, पटना-4

Training Moduel=PART-I_Edited.qxd 12/16/2013 3:05 PM Page 2

प्रार्थना

दे दे मेरे अधरों को ज्ञान-स्वर,
यही माँगते हम तुझसे वर।

निर्मल विचारों की सृष्टि दे,
व्यवहार, विद्या की दृष्टि दे।
पहचान मैं अपने को लूँ,
मुझे ऐसी सूक्ष्म दृष्टि दे।
चलूँ सत्य न्याय के मार्ग पर,
यही माँगते हम तुझसे वर।

मरूस्थल में या मधुवन में हो,
मन किन्तु अनुशासन में हो।
प्रतिबिम्ब हर आदर्श का,
इस छोटे से जीवन में हो।
स्वच्छ आचरण में ढले उमर,
यही माँगते हम तुझसे वर।

बने बाती जैसा ये तन मेरा,
हो तेल जैसा ये मन मेरा।
जलूँ और जग को प्रकाश दूँ,
दीये जैसा हो जीवन मेरा।
बलिदान की जो मेरी डगर,
यही माँगते हम तुझसे वर।

Training Moduel=PART-I_Edited.qxd 12/16/2013 3:05 PM Page 3

प्रयास

विशेष प्रशिक्षण केन्द्र के उपयोग हेतु

शिक्षक प्रशिक्षण संदर्शिका

भाग–1

बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना

शिक्षा भवन, राष्ट्रभाषा परिषद् परिसर, सैदपुर, पटना-4

शिक्षा का अधिकार
सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

Training Moduel=PART-I_Edited.qxd 12/16/2013 3:05 PM Page 4

प्रकाशक

बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्

शिक्षा भवन, राष्ट्रभाषा परिषद् परिसर, सैदपुर, पटना–4

इमेल: ssabihar@hotmail.com

वेबसाईट : www.bepcssa.org

© बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना

अवधारणा, प्रबंधन एवं मार्गदर्शन

- दीपक कुमार सिंह, राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी एवं
  बबन तिवारी, अपर राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी

संदर्शिका विकास कार्यशाला के प्रतिभागी

- धर्मेन्द्र कुमार गुप्ता, बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना।
- नीरज कुमार, बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना।
- रामप्रीत प्रसाद चौधरी, शिक्षक, वैशाली।
- अखिलेश कुमार सिंह, शिक्षक, वैशाली।
- कुमार सुनील सिंह, शिक्षक, मुंगेर।
- कार्तिक झा, शिक्षक, लखीसराय।
- राम सज्जन सिंह, शिक्षक, पटना।
- राज नन्दन पोद्दार, शिक्षक, अररिया।
- जय प्रकाश सिंह, विद्या भवन सोसाईटी, पटना ।
- राम बाबू आर्य, ज्ञान विज्ञान समीति, बिहार, पटना।
- जैनन्द्र कुमार, केयर इंडिया, पटना।

मुद्रण, आवरण एवं पृष्ठ–सज्जा

- संतोष कुमार श्रीवास्तव
  डिजाइन स्टूडियो, पटना, मो.- 8409999333

Training Moduel=PART-I_Edited.qxd 12/16/2013 3:05 PM Page 5

राज्य परियोजना निदेशक की कलम से ...

सर्व शिक्षा अभियान के तहत विद्यालय से बाहर के बच्चों को विद्यालय से जोड़ने का सार्थक प्रयास किया जिसके परिणाम अब मुखर होने लगे हैं।

वैकल्पिक एवं नवाचारी शिक्षा अपने उद्देश्यों की संप्राप्ति दिनानुदिन कर रही है। अपने हस्तक्षेपों को स्वावलम्बी और सशक्त बनाने के जो प्रयास इस संभाग द्वारा हुए उनमें ब्रिज मेटेरियल्स और शिक्षक संदर्शिकाएँ भी महत्वपूर्ण हैं।

प्रस्तुत प्रशिक्षण माड्यूल विशेष प्रशिक्षण केन्द्रों के संचालन, स्वयंसेवकों के दायित्वों एवं बच्चों के प्रति संवेदनशील बनाने के साथ-साथ स्वयंसेवकों को सक्षम बनाने की दिशा में एक और प्रयास है।

मॉड्यूल निर्माण कार्यशाला से जुड़े पदाधिकारीगण एवं प्रतिभागी साधुवाद के पात्र हैं। सभी सुधिजनों से अपेक्षा है कि अपने बहुमूल्य सुझाव देकर आगामी प्रकाशन को और बेहतर बनाने में हमारा सहयोग करें।

राहुल सिंह, आई.ए.एस.
राज्य परियोजना निदेशक,
बिहार शिक्षा परियोजना परिषद्, पटना

Training Moduel=PART-I_Edited.qxd 12/16/2013 3:05 PM Page 6

Training Moduel=PART-I_Edited.qxd 12/16/2013 3:06 PM Page 7

समय सारणी

प्रथम सत्र

9.30 बजे पूर्वाह्न से 1.00 बजे अपराह्न तक

चाय

11.30 बजे पूर्वाह्न से 11.45 बजे पूर्वाह्न तक

भोजनावकाश

1.00 बजे अपराह्न से 2.00 बजे अपराह्न तक

दूसरा सत्र

2.00 बजे अपराह्न से 5.00 बजे अपराह्न तक

चाय

3.30 बजे अपराह्न से 3.45 बजे अपराह्न तक

प्रथम दिन सत्र पूर्वाह्न 9:00 बजे से होगा

Training Moduel=PART-I_Edited.qxd 12/16/2013 3:06 PM Page 8

साधनसेवियों के लिए सामान्य निर्देश

- प्रशिक्षण के पूर्व सभी आवश्यक सामग्री की व्यवस्था कर लें।
- प्रशिक्षण प्रारंभ होने के पूर्व साधनसेवी आपस में प्रशिक्षण की विषय वस्तु पर चर्चा करते हुए कार्यों का बंटवारा कर लें।
- प्रशिक्षण के पूर्व निबंधन पंजी, उपस्थिति पंजी तैयार कर लें।
- प्रतिभागियों के बैठने हेतु पर्याप्त स्थान, हवादार व प्रकाशयुक्त हो।
- प्रशिक्षण कक्ष में एक दीवार घड़ी अवश्य हो।
- प्रशिक्षण कक्ष की दो-तीन दीवारों के साथ रस्सी तनी होनी चाहिये एवम् उसके साथ पेपर क्लिप लगी रहनी चाहिये।
- प्रशिक्षण के प्रारंभ में ही प्रशिक्षण से संबंधित सारी बातें स्पष्ट कर देनी चाहिये।
- प्रशिक्षण सहभागिता आधारित हो। सभी प्रतिभागियों को बोलने का अवसर प्रदान करें।
- समूह का निर्माण खेल एवम् गतिविधियों से करें तथा प्रत्येक समूह का नाम शिक्षाविद्, लेखाक के नाम पर रख सकते हैं।
- प्रशिक्षण में एकरसता को तोड़ने के लिए खेल, कविता, गीत, कहानी चुटकुले आदि का प्रयोग करें किन्तु अधिकता से बचे।
- प्रत्येक दिन सत्र समाप्ति के उपरांत पूरे दिन के कार्यों की समीक्षा 10 मिनट में सदन के अंदर करायें।

Training Moduel=PART-I_Edited.qxd 12/16/2013 3:06 PM Page 9

अनुक्रम

पहला दिन

1. निबंधन एवं परिचय
2. प्रशिक्षण से अपेक्षाएँ
3. प्रशिक्षण का उद्देश्य
4. पहुँच एवं विशेष प्रशिक्षण – क्या, क्यों और कैसे

दूसरा दिन

1. समुदाय से जुड़ाव
2. विद्यालयीय तत्परता
3. स्वयंसेवकों की का कार्य एवं दायित्व
4. वातावरण निर्माण

तीसरा दिन

1. बच्चों की समझ
2. बच्चों की पसंद
3. सीखने के तरीके
4. शिक्षण कौशल

चौथा दिन

1. पाठ्य–पुस्तकों से परिचय
2. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन – क्या, क्यों और कैसे

पाँचवा दिन

1. भाषा की कुशलताएँ

छठा दिन

1. गणित शिक्षण हेतु वातावरण निर्माण
2. शून्य की समझ
3. इकाई–दहाई की समझ
4. स्थानीय मान
5. जोड़ एवं घटाव
6. ज्यामितीय आकृतियाँ

लगातार...

Training Moduel=PART-I_Edited.qxd 12/16/2013 3:06 PM Page 10

सातवाँ दिन

1. पर्यावरण अध्ययन की अवधारणा
2. पर्यावरण अध्ययन के शिक्षण बिन्दु
3. पर्यावरण अध्ययन शिक्षण क्षमता का विकास
4. स्वास्थ्य एवं सफाई

आठवां दिन

1. अंग्रेजी की समझ

नवाँ दिन

1. Baseline Test 8 Child Profile

दसवाँ दिन

1. कला शिक्षण एवं सृजनशीलता
2. टी.एल.एम. निर्माण एवं प्रस्तुति
3. समापन

परिशिष्ट

Training Moduel=PART-I_Edited.qxd 12/16/2013 3:07 PM Page 11

शिक्षक प्रशिक्षण संदर्शिका

भाग–1

का उपयोग

यह प्रशिक्षण संदर्शिका प्रतिभागियों में सूचना एवं कौशल विकसित करने में सहायक होगी। साथ ही, प्रशिक्षणोपरांत, प्रतिभागियों की अभिवृति में भी परिवर्त्तन नज़र आएगा।

प्रस्तुत संदर्शिका का उपयोग कर साधनसेवी प्रशिक्षण के लक्षण को प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे। इसके लिए आवश्यक होगा कि प्रशिक्षण प्रारंभ करने के पूर्व साधनसेवी इस संदर्शिका का ध्यानपूर्वक अध्ययन कर लें। प्रत्येक दिन सत्र संचालन हेतु आवश्यक सामग्रियों की पूर्व में ही व्यवस्था कर लें। सत्र संचालन हेतु अपनायी गई विधियों की स्पष्ट समझ रखें तथा अगले दिन प्रशिक्षण संचालन क लिए आपस में कार्यों का बँटवारा कर लें।

इस संदर्शिका में प्रयास केन्द्र पर उपयोग में लाई जानेवाली पाठ्य पुस्तकों की पाठ्य–सामग्रियों के उपयोग की विधियों पर पर्याप्त बल दिया गया है अत: वर्गकक्ष विनिमयन में दक्ष बनाने के लिए भी यह मार्गदर्शिका सहायक होगी।

प्रयास भाषा की पुस्तक में सन्निहित पर्यावरण के तथ्यों का पाठानुसार वर्णन परिशिष्ट में किया गया है जिसका उपयोग प्रशिक्षण एवं वर्गकक्ष दोनों में सरलता से किया जा सकता है। अतएव इस परिशिष्ट का उपयोग प्रशिक्षण में अनिवार्य रूप से करें तथा इसका उपयोग कक्षा में करने हेतु प्रेरित करें।

साधनसेवी स्वयं समयनिष्ठ हों तथा प्रतिभागियों को भी इसके लिए प्रेरित करें। महिलाओं का आदर करें। प्रशिक्षण कक्ष एवं आसपास स्वच्छ रखें। हर संभव प्रयास करें कि संप्रेषण दो तरफा हो। प्रतिभागियों के विचारों का आदर करते हुए उन्हें विचार अभिव्यक्ति का पर्याप्त अवसर दें।

प्रशिक्षण मे आए प्रतिभागियों की शैक्षिक आवश्यकतओं को समझ कर उसका समाधान करने का हर संभव प्रयास करें तथा समाधान के लिए स्थानीय स्तर पर उपलब्ध संसाधनों के उपयोग पर बल दें। ■

Training Moduel=PART-I_Edited.qxd 12/16/2013 3:07 PM Page 12

पहला दिन
प्रथम सत्र

निबंधन परिचय

निबंधन / प्रार्थना / अभियान गीत / प्रतिवेदन-लेखन / डायरी-लेखन

निर्देश : साधनसेवी इसके क्रम को न बदलें।

उद्देश्य :

- प्रतिभागियों की झिझक दूर करना।
- प्रशिक्षण का स्वरूप क्या होगा।

प्रक्रिया :

प्रतिभागियों का निबंधन निम्न बिन्दुओं के आलोक में दिये गए प्रारूप में करें :-

क्रम संख्या	प्रतिभागी का नाम	पत्राचार का पता	पिता/पति का नाम	निवास स्थान से प्रशिक्षण केन्द्र की दूरी	विद्यालय का नाम	संकुल का नाम	प्रखंड	सम्पर्क नं०

नोट :

- प्रतिभागी इसे स्वयं भरें।
- निबंधन के पूर्व यह सुनिश्चित कर लें कि निबंधन उन्हीं प्रतिभागियों का किया गया है जो केन्द्र से विरमन-पत्र लेकर आए हैं।
- निबंधन के पश्चात् क्रमशः प्रतिभागियों को पैड, कलम आदि प्रशिक्षण-सामग्री उपलब्ध कराएँ।

अभियान गीत कराने की प्रक्रिया :

साधनसेवी सभी प्रतिभागियों को घेरे में खड़ा होने का निर्देश दें -

- जानकारी दें कि प्रत्येक दिन सत्र का प्रारंभ एक अभियान गीत से होगा।
- प्रथम दिन साधनसेवी की अगुआई में ऐसा किया जाएगा।
- अगले दिन से प्रतिभागी गण ही इस सत्र का संचालन करेंगे।
- अभियान गीत गवाएँ। (परिशिष्ट 1 में दिये जा रहे हैं)

परिचय सत्र की प्रक्रिया

- साधनसेवी हिन्दी-वर्णमाला के अक्षरों को श्यामपट्ट पर अंकित करें। प्रतिभागियों को निर्देश दें कि वर्णमाला में अक्षरों के क्रम के अनुसार अपने नाम के प्रथम अक्षर

को ध्यान में रखकर अपना स्थान ग्रहण करें तथा निम्न बिन्दुओं के आलोक में क्रमवार अपना परिचय दें –

नाम –

शैक्षिक योग्यता –

केन्द्र –

प्रखंड –

साधनसेवी अपने किसी नए तरीके का भी प्रयोग कर परिचय-सत्र का संचालन कर सकते हैं। अंग्रेजी के वर्णमाला के अक्षरों से भी परिचय-सत्र करवाया जा सकता है।

1. उदाहरण : राज्य व राज्य की राजधानी का जोड़ा बनाकर

प्रक्रिया : फ्लैश कार्ड पर राज्य व राज्य की राजधानी का नाम अंकित कर प्रतिभागियों के बीच में बाँटना एवं जोड़े में बैठना। इसके बाद 5 मिनट का समय देकर जोड़े में बैठे हुए प्रतिभागी एक दूसरे का परिचय देंगे।

2. उदाहरण : प्रतिभागी का नाम एवं उसे विशेषण से जोड़कर बताना।

प्रतिभागी अपने नाम के प्रथम अक्षर से कोई विशेषण बताकर अपना परिचय शुरू करेंगे। जैसे–

नाम : जैनेन्द्र : ज्वायफूल

शैक्षणिक योग्यता :

केन्द्र :

प्रखंड :

डायरी लेखन :

साधनसेवी, डायरीलेखान की प्रक्रिया बताते हुए स्पष्ट करें कि :

- प्रतिदिन सभी प्रतिभागी प्रशिक्षण में किए गए क्रिया-कलापों की एक डायरी भी तैयार करेंगे।
- प्रशिक्षण कक्ष में की जानेवाली गतिविधियों को अंकित करना ही डायरी लेखान है।
- सभी प्रतिभागी पिछले दिन की 2-2 या 3-3 या 4-4 गतिविधियों का जिक्र करेंगे साथ ही साधनसेवी यह ध्यान रखेंगे कि सभी प्रतिभागी बिना दुहराए नयी बातों को जोड़ते जायेंगे।

प्रतिवेदन लेखन :

यह साधनसेवी एवं मुख्य प्रशिक्षक प्रशिक्षण के अन्त में एक प्रतिवेदन जिले या राज्य को प्रस्तुत करेंगे।

Training Moduel=PART-I_Edited.qxd 12/16/2013 3:07 PM Page 14

दूसरा सत्र
प्रशिक्षण से अपेक्षाएँ

उद्देश्य – यह जानना कि प्रतिभागियों की प्रशिक्षण से क्या-क्या अपेक्षाएँ हैं?

सामग्री – चार्ट पेपर एवं स्केच पेन/मार्कर इत्यादि

प्रक्रिया – साधनसेवी चार्ट पेपर दीवार पर टांग कर प्रतिभागी से उनकी अपेक्षाएँ पूछेगा और एक-एक कर के सारे बिन्दुओं को एकत्रित करने के बाद यह बताएँ कि हम प्रशिक्षण के दौरान हर रोज इस चार्ट पेपर को ध्यान से देखेंगे और इन बिन्दुओं को (✓) करेंगे कि कौन सी अपेक्षाएँ पूरी हुई। चार्ट पेपर प्रशिक्षण अवधि के दौरान टंगा रहेगा।

नोट : प्रशिक्षक ही पूरा करेंगे।

तीसरा एवं चौथा सत्र
प्रशिक्षण का उद्देश्य

उद्देश्य

- प्रशिक्षण क्यों? की समझ पैदा करना।
- **'प्रयास'** कार्यक्रम की जानकारी देना।
- **'प्रयास'** कार्यक्रम के अन्तर्गत किए जाने वाले हस्तक्षेप की जानकारी प्रदान करना।

सामग्री

- **'प्रयास'** मार्गदर्शिका की प्रतियाँ (प्रतिभागियों की संख्यानुसार)

प्रक्रिया

साधनसेवी स्पष्ट करें कि 8-10 वर्ष के बच्चों को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ने हेतु तीन माह के लिए प्रयास केन्द्र की स्थापना की गई है। तीन माह का उन्मुखीकरण शिक्षण प्रदान करके दूसरी कक्षा के स्तर तक की भाषा, गणित एवं पर्यावरण की दक्षता प्राप्ति के उपरान्त यहाँ के शिक्षार्थियों का नामांकन बगल के विद्यालय में करवाकर अगले तीन महीनों तक इन बच्चों को विद्यालय लाने ले जाने एवं अन्य शैक्षिक गतिविधियों पर निगाह रखकर उपचारात्मक शिक्षण (Tuition) की व्यवस्था है।

स्पष्ट करें कि इस सात दिवसीय प्रशिक्षण का उद्देश्य है –

- स्वयंसेवियों को उनके कार्य एवं दायित्व का बोध कराना।
- स्वयंसेवी बच्चों को समझ सकें, इसकी क्षमता विकसित करना।
- भाषा, गणित एवं पर्यावरण की कक्षा-2 तक की दक्षताओं से परिचित कराना।
- मूल्यांकन का महत्त्व एवं मूल्यांकन के तरीकों से अवगत कराना।
- गतिविधि एवं टी.एल.एम. का सीखने की प्रक्रिया में क्या महत्त्व है? इससे अवगत

कराना, इत्यादि।

अब प्रतिभागियों को चार समूहों में विभाजित कर मार्गदर्शिका की प्रतियाँ वितरित कर कार्य का निम्नवत् विभाजन करें –

समूह	प्रदत्त विषय
समूह संख्या 01 –	प्रयास केन्द्र क्यों?
समूह संख्या 02 –	केन्द्र संचालन के पूर्व की तैयारी
समूह संख्या 03 –	केन्द्र-संचालन
समूह संख्या 04 –	मूल्यांकन एवं मुख्यधारा से जोड़ना

क्रमवार समूह की प्रस्तुति कराएँ। प्रस्तुति के क्रम में उभरे बिन्दुओं पर चर्चा करें एवं निम्न बिन्दु को भी समेकन का आधार बनाएँ।

1. प्रयास केन्द्र 8–10 वर्ष की उम्र-समूह के वैसे बच्चों के लिए है जो विद्यालय से बाहर हैं।
   - तीसरी कक्षा में नामांकन कराकर मुख्यधारा से जोड़ने हेतु
   - भाषा एवं गणित में दूसरी कक्षा तक की दक्षता लाने के लिए
   - प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण के लिए।
2. केन्द्र उद्घाटन से पूर्व क्रयसमिति से मिलकर टी.एल.एम. की खरीददारी करना आवश्यक आँकड़ों/ विपत्रों का संधारण करना।
   - केन्द्र में नामांकन के लिए चिह्नित बच्चों के माता-पिता से मिलकर केन्द्र उद्घाटन की सूचना देना।
   - उद्घाटन के दिन बच्चों के बीच सामग्री यथा : स्लेट, पेंसिल आदि का वितरण करना।
   - अभिभावकों का केन्द्र के प्रति उन्मुखीकरण करना।
3. प्रतिदिन चार घंटे चलने वाली निर्धारित गतिविधियों का संचालन।
   - नामांकित बच्चों की उपस्थिति सुनिश्चित करवाना।
   - निर्धारित दक्षता को निर्धारित समय (तीन महीने) में पूरा करवाना।
   - उपलब्धि के स्तर से विद्यालय शिक्षा समिति और माता समिति को अवगत कराना।
   - साप्ताहिक प्रगति पत्रक प्रपत्र 'घ' तैयार करना।
4. नामांकित छात्र का पूरा प्रोफाइल प्रपत्र 'क' में तैयार करना ।
   - औपचारिक विद्यालय में नामांकन के उपरान्त अगले तीन महीने तक विद्यालय में ठहराव सुनिश्चित करना।
   - उपचारात्मक शिक्षण (Tuition) देना।
   - प्रधानाध्यापक को बच्चे की पूरी अद्यतन विवरणी उपलब्ध कराना एवं उसकी

गतिविधियों, सक्रियता पर नज़र रखना।

उपर्युक्त तथ्यों को समेकित करते हुए साधनसेवी स्वयंसेवकों में प्रयास–केन्द्र की अवधारणा एवं महत्त्व को स्पष्ट कर सकेंगे। स्वयंसेवकों में अपने कार्य के प्रति समझ, आस्था, ज़िम्मेवारी विकसित करके उन्हें ऊर्जावान और क्रियाशील बना सकेंगे।

साधनसेवी स्पष्ट करें कि इसके अतिरिक्त प्रशिक्षण के निम्न उद्देश्य हैं।

- विशेष प्रशिक्षण केन्द्र की अवधारणा से अवगत कराना।
- विशेष प्रशिक्षण केन्द्र के विभिन्न मॉडल से परिचय कराना।
- पाठ्यक्रम, पाठ्य–पुस्तक, शिक्षक संदर्शिका, सहायक शिक्षण सामग्री निर्माण एवं अन्य सामग्री से अवगत कराना।
- शिक्षण की नवीन विधाओं से अवगत कराना।
- बच्चों का ठहराव सुनिश्चित करने हेतु बाल केन्द्रित गतिविधि आधारित, रूचिपूर्ण शिक्षण विद्या से अवगत कराना।
- विद्यालय शिक्षा समिति, अभिभावक समिति एवं अन्य स्थानीय समितियों से सहयोग प्राप्त करने हेतु बैठक आयोजित करने के बारे में बताना।
- बच्चों को मुख्यधारा से जोड़ने हेतु प्रयास की विद्या से अवगत कराना।
- दक्षता आधारित गुणवत्तापरक शिक्षा की अवधारणा एवं विद्या से अवगत कराना।
- सतत् मूल्यांकन के महत्व एवं विद्या से अवगत कराना।
- सीखने सिखाने की प्रक्रिया, बाल मनोविज्ञान से परिचय कराना।
- अनुदेशक शिक्षण कार्य करने की दक्षता विकसित करना।
- विशेष प्रशिक्षण केन्द्र संचालन हेतु, समुदाय से सम्पर्क कर लक्ष्य समूह के बच्चों को केन्द्र से जोड़ने हेतु प्रेरित करना, शिक्षा स्वयंसेवक को एक शिक्षक के रूप में तैयार करना।
- शिक्षा स्वयंसेवक के रूप में करने की दक्षता एवं व्यवहारिक निपुणता विकसित करना।

Training Moduel=PART-I_Edited.qxd 12/16/2013 3:08 PM Page 17

दूसरा दिन

चेतना सत्र – प्रार्थना/अभियान गीत/प्रतिवेदन/डायरी–वाचन

प्रथम सत्र

समुदाय से जुड़ाव : क्यों और कैसे

उद्देश्य

- समुदाय के प्रति मनोवृति में साकारात्मक परिवर्त्तन एवं केन्द्र संचालन में सहयोग लेने की भावना विकसित होगी।

प्रक्रिया

- इस मुद्दे पर चर्चा के उपरांत सभी प्रतिभागियों से बारी–बारी से समुदाय के प्रति उनकी सोच को साधनसेवी एक चार्ट पेपर पर अंकित करें। अंत में निम्न बिन्दुओं के आलोक में समुदाय की सहभागिता स्पष्ट करें।
  - शिक्षा में समुदाय की भागीदारी
  - सुविधाविहिन अपवांचित वर्ग के बालिकायें, अल्पसंख्यक, अभिभावकों को प्रेरित कर शिक्षा के प्रति आकर्षित करने में समुदाय की भूमिका।

दूसरा सत्र

विद्यालयीय तत्परता : क्या, क्यों और कैसे

उद्देश्य

- विद्यालय आने के पूर्व बच्चों की तैयारी।

प्रक्रिया

- इस मुद्दे पर चर्चा के उपरांत सभी प्रतिभागियों से बारी–बारी से विद्यालयी तत्परता के बारे में उनकी सोच को साधनसेवी एक चार्ट पेपर पर अंकित करें। अंत में उभरे बिन्दुओं के आलोक में दिये गये विद्यालयी तत्परता को स्पष्ट करें।

विद्यालयीय तत्परता

''विद्यालयीय तत्परता'' की अवधारणा पहले दो चीजों से निर्धारित होती थी – पहला बच्चों की उम्र क्या है और इस उम्र के सापेक्ष उसकी दक्षता क्या है। लेकिन हाल के दिनों में इसे व्यापक रूप से देखा जाने लगा है।

आज हम जब बाल केन्द्रित शिक्षा की बात करते है, तो उसमें बच्चों के पूर्ण

विकास की बात करते हैं और उसमें सामाजिक, भावनात्मक, भाशा और संज्ञानात्मक विकास के रूप में देखते है। इस प्रकार, स्कूल तत्परता सिर्फ संज्ञानात्मक विकास के स्तर तक ही सीमित नहीं है, परन्तु शारीरिक शैक्षिणीक, सामाजिक और भावनात्मक विकास के साथ, सीखने के लिए सामान्य दृष्टिकोण को भी शामिल किया जाना आवश्यक है, जो कि बहुआयामी है।

जब इस प्रकार बहुआयामी विकास की बात करते है तो यह भी समझना होगा कि प्रत्येक बच्चा अपने-आप में विशिष्ट विशेषताओं के साथ बढ़ता है, जो वह आपे समाज और वातावरण से भी सीखता है एवम् साथ-ही-साथ प्रभावित भी होता है।

इसी संदर्भ में जब हम वैसे बच्चों की बात करते है, जो स्कूल से छिजित (drop-out) हो या स्कूल छोड़ चुके है तब हमें इनके सामाजिक एवम् भावनात्मक विकास के विभिन्न पहलुओं को और बारीकियों से समझने की कोशिश करनी होगी।

ये बच्चे जब विशिष्ट प्रकार के स्कूल में पढ़ने के लिए आते है, तो उनकी उम्र करीब 9 साल से ऊपर ही होती है, जिसमें वो अपने आस-पास के माहौल से बहुत कुछ सीख कर आते हैं। लेकिन जब उन्हें क्रमबद्व तरीके से सिखाने की कोशिश की जाती है, तो वो उसे अपने पूर्व अनुभवों एवम् ज्ञान से जोड़ने की कोशिश करते है। इस सन्दर्भ में एक फिल्म जिसे आस्कर (OSCAR) अर्वाड से सम्मानित किया गया था मैं उसका जिक्र जरूर करना चाहुँगा। उस फिल्म में भी नायक स्कूल जाता हुआ बच्चा नहीं होता है लेकिन उसने आस-पास के माहौल से बहुत कुछ सीखा। जिसमें उसने उत्तर देते समय उन सारी घटनाओं को याद करता है, जो उसके प्रारंभिक जीवन में घटित हो चुकी थी। इस फिल्म में नायक एक करोड़ रूपया जीतता है एवम् अन्त में हीरो बन जाता है। इस फिल्म का नाम ''स्लमडॉग मिलेनियर'' है।

चलिए इसी सन्दर्भ में जब हम आगे बढ़ते है तो उसके सामाजिक पहलुओं का जिक्र करते है। चुँकि ऐसे बच्चे जब स्कूल नहीं आते है, तो उनकी एक अपनी दुनिया होती है, अपना समाज होता है। अपना समाज का अर्थ यह है कि यह बच्चे उन्हीं बच्चों के साथ खेलते हैं, जो बच्चे स्कूल नहीं जाते है। अतः उस समाज का निर्माण होता है एवम् दिनभर वो अपनी दिनचर्या के अनुसार कार्य करते है, जिसमें वो कुछ-न-कुछ सीखते है। एक अच्छे शिक्षक जब इन पहलुओं को समझते है, तो वो भी अपनी पाठ्य विषय को उससे जोड़कर पढ़ाने का प्रयास करते है जिससे, वह बच्चा आसानी से इन शब्दों को उससे जोड़ सके।

चूँकि किताबों की भाषा और उस समाज की भाषा में अन्तर होता है। अतः ऐसे बच्चों को थोड़ा प्रोत्साहित किया जाए, तो ये सीखने के साथ-साथ दूसरे बच्चों से भी घुलना-मिलना शुरू कर देते है एवम् इस प्रक्रिया में एक नए समाज का निर्माण शुरू

होने लगता है।

इसी क्रम में अगर भाषा विकास की बात की जाए तो पहले इस प्रकार के बच्चे अपने शारीरिक हाव-भाव से अपनी बातों को रखने का प्रयास करते है एवम् किताबी शब्दों की जानकारी न होने की वजह से अपनी बातों को नहीं रख पाते है। ऐसी स्थिति में कुछ ऐसा खेल खिलाया जाए जिससे वो अपनी झिझक दूर कर सके और दूसरे बच्चों के साथ भी घुल-मिल जाए एवम् अपनी बातों को रख सके। इस प्रकार से बच्चों का सामाजिक एवम् भाषा विकास किया जा सकता है। इन्हीं परिस्थितियों में अगर शिक्षक उन्हें प्रोत्साहित ना करे तो वो भावनात्मक रूप से नहीं जुड़ पाते है और आगे की स्कूल के लिए तैयारी छुट जाती है।

अत: स्कूल तत्परता को एक व्यापक दृष्टिकोण एवम् नजरिए से देखने की आवश्यकता है एवम् विशेषकर ऐसे बच्चे जो ड्राप आउट है और दुबारा से अपनी पढ़ाई शुरू करना चाहते है उन्हें सामाजिक एवम् भावनात्मक सहायता कर शिक्षक उन्हें आने वाले दिनों के लिए तैयार कर सकते है।

तीसरा सत्र
स्वयंसेवकों की भूमिका

उद्देश्य

- यह जानना कि स्वयंसेवकों का कार्य एवं दायित्व क्या है।

सामग्री

- चार्ट पेपर, स्केच पेन

प्रक्रिया

- प्रतिभागियों को निम्न विन्दुओं के आलोक में समूह में विभक्त करें।
  - आवासीय केन्द्रों पर बच्चों के साथ रात्रि विश्राम।
  - केन्द्र पर नामांकित के बच्चों की प्रतिदिन की उपस्थिति एवं ठहराव सुनिश्चित करना।
  - केन्द्र के बच्चों के लिए निर्धारित दक्षता को निर्धारित समय पर पूरा करना।
  - साप्ताहिक प्रगति पत्रक तैयार कर केन्द्र पर प्रदर्शित करना।
  - बच्चों का प्रोफाईल एवं बेसलाइन तैयार कर प्रदर्शित करना।
  - बच्चों को मूख्य धारा से जोड़ना एवं उपचारात्मक प्रशिक्षण देना।
  - केन्द्र पर मनोरंजक गतिविधियां, सांस्कृतिक कार्यक्रम खेल-कूद आदि का आयोजन करना।

- बच्चों के माता-पिता की बैठक कर प्रोत्साहित करना।
- बच्चों के रहन-सहन एवं खान-पान पर धयान देना।

चौथा सत्र

वातावरण निर्माण

(केन्द्र की साज-सज्जा)

उद्देश्य :

- केन्द्र को बच्चों के लिए आकर्षक बनाना।
- केन्द्र को बच्चों के लिए सीखने के केन्द्र के रूप में विकसित करना।
- केन्द्र की साज-सज्जा बच्चों को जिज्ञासु बनाने में मदद कर सकें, स्वयं सेवकों में इसकी समझ जागृत करना।

गतिविधियाँ :

प्रशिक्षक पाँच-पाँच प्रतिभागियों के दो समूह बनाकर दो तरह की परिस्थितियों पर प्रतिभागियों से रोल प्ले करायेंगे।

परिस्थिति 1 : टी.एल.एम. एवं प्रशिक्षण सामग्रियों से सुसज्जित कक्षा एवं रोचक गतिविधियों के द्वारा स्वयं सेवक द्वारा कक्षा संचालन।

परिस्थिति 2 : अस्त-व्यस्त कक्षा और सभी सामग्री बिखरे हुए हैं, एवं स्वयं सेवक द्वारा कक्ष कार्य रूचिपूर्ण नहीं है।

गतिविधि के पश्चात् साधनसेवी प्रतिभागियों से प्रश्न पूछकर बड़े समूह में सहमति बनायेंगे कि बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में अग्रसर करने के लिए आवश्यक है कि केन्द्र की साज-सज्जा आकर्शक हो, बच्चों को सीखने हेतु, प्रेरित करनेवाली चार्ट पेपर एवं अन्य सामग्रियाँ उपलब्ध हो एवं प्रशिक्षण प्रक्रिया रोचक हो।

साधनसेवी द्वारा पूछे जानेवाले प्रश्न :

- रौल प्ले में आपने क्या देखा?
- दोनों रौल में क्या अंतर अपने पाया?
- बच्चे किस परिस्थिति में बेहतर सीखा सकते हैं?
- हमें केन्द्र में वातावरण (केन्द्र की साज-सज्जा) के लिए हम क्या-क्या कर सकते हैं?

Training Moduel=PART-I_Edited.qxd 12/16/2013 3:09 PM Page 21

तीसरा दिन

प्रथम सत्र

प्रार्थना/अभियान गीत/ प्रतिवेदन/डायरी–वाचन

बच्चों की समझ

उद्देश्य

- बच्चों को जानना।
- बच्चों के प्रति स्वयं सेवकों को संवेदनशील बनाना।

सामग्री

- चार्ट पेपर, स्केच पेन, श्यामपट, खल्ली डस्टर

प्रक्रिया

- साधनसेवी प्रतिभागियों के सामने एक प्रश्न रखें 'बच्चों के किन गतिविधियों। क्रियाकलापों को आप अवगुण मानते हैं?'
- प्रतिभागियों को 5 समूहों में बाँट दें।
- प्रत्येक समूह को चार्ट पेपर एवं स्केच पेन उपलब्ध करा दें तथा निर्देश दें कि उक्त प्रश्न का उत्तर अंकित करें।
- 15 मिनट के बाद प्रत्येक दल से बारी–बारी से प्रस्तुति कराएँ।

– **उत्तर कुछ इस प्रकार हो सकते हैं :–**

- बच्चों द्वारा पेपर (कागज का टुकड़ा) फाड़ना।
- वर्ग कक्ष से बार–बार बाहर जाना।
- डेस्क पर तरह–तरह के चित्र बनाना।
- आपस में गप लड़ाना।
- तरह–तरह की आवाज निकालना।

– साधनसेवी स्पष्ट करें कि बच्चों की हर गतिविधि में कोई–न–कोई गुण होता है, हमें उन्हें समझने की आवश्यकता है। जैसे :–

अवगुण	**गुण**
■ पेपर फाड़ना।	■ सृजनशील होना।
■ बार–बार बाहर जाना।	■ फुर्तीला।
■ डेस्क पर स्केच करना।	■ चित्रकारी।

Training Moduel=PART-I_Edited.qxd 12/16/2013 3:09 PM Page 22

■ आपस में गप करना।
■ तार्किक होना।
■ तरह-तरह की आवाज निकालना
■ संगीत कला

– इस तरह साधनसेवी प्रतिभागियों को इस प्रक्रिया द्वारा बच्चों के प्रति संवेदनशील बनाने का प्रयास करें।

– चर्चा को आगे बढ़ाते हुए बच्चों की पसंद-नापसंद पर सबों का ध्यान आकृष्ट करें।

दूसरा सत्र

बच्चों की पसंद

उद्देश्य

■ बच्चों की पसंद-नापसंद को जानना।

सामग्री

■ श्यामपट्ट, खाल्ली, डस्टर।

प्रक्रिया - साधनसेवी बड़े समूह में (सदन में) दो प्रश्न रखें।

■ बच्चे क्या-क्या पसंद करते हैं?
■ बच्चे क्या-क्या नापसंद करते हैं?

– श्यामपट्ट को दो भागों में बाँट कर एक ओर पंसद और दूसरी ओर नापसंद शीर्षक दे दें।

– प्राप्त विचारों को दोनों शीर्षकों में बारी-बारी से लिखाते जाएँ।

– विचार कुछ इस प्रकार के हो सकते हैं -

पसंद

✱ खोलना ✱ मिठाई खाना ✱ नकल करना ✱ गाना
✱ आकृतियाँ बनाना ✱ दोस्ती करना ✱ दौड़ना ✱ कहानी सुनना
✱ स्वच्छन्द रहना ✱ चिल्लाना ✱ तमाशा देखना ✱ खोजना
✱ हँसना ✱ बातें करना ✱ बन्धन मुक्त रहना ✱ बात बनाना
✱ तरह-तरह की आवाज़ें निकालना ✱ अपनी उपलब्धियों की चर्चा करना
✱ प्रयोग करना ✱ कोलाहल

- साधनसेवी सदन से प्राप्त विचारों को समेकित करते हुए यह निष्कर्ष निकालें कि बच्चे जिन बातों को पसंद करते हैं हम उन युक्तियों का उपयोग उनके शिक्षण के लिए कर सकते हैं। जिससे हमारा शिक्षण ग्राह्य, आनंददायी और बाल केन्द्रित हो सकता है।
- साधनसेवी प्राप्त विचारों को समेकित करते हुए यह निष्कर्ष निकालें कि शिक्षक बच्चों को पढ़ाते नहीं हैं, वे ऐसा माहौल बनाएँ जिससे बच्चे स्वत: सीखें। यह बात प्रशिक्षण के दौरान बार-बार कही जा सकती है।
- इसी प्रकार बच्चों की नापसंद को समझें -

नापसंद

✱ डाँट ✱ दबाव ✱ अप्राकृतिक वातावरण ✱ झिड़कना
✱ भेदभाव ✱ शिक्षक शासन ✱ महत्त्व न देना ✱ इच्छा के विपरीत
✱ पढ़ना, पढ़ाया जाना ✱ थोप देना ✱ अनुशासन
✱ स्व का हनन ✱ शांत रहना

- साधनसेवी बच्चों की नापसंद को समेकित करते हुए सदन की राय बनाएँ कि केन्द्र संचालन के समय हमें इससे बचने का प्रयास करना चाहिए तभी हमारा केन्द्र तथा हम प्रभावी हो सकेंगे।
- पुन: साधनसेवी बच्चों के पसंद-नापसंद को तीन स्तरों पर समझाने का प्रयास करें-
- ये तीनों स्तर कुछ इस प्रकार हो सकते हैं -
  - ■ बुद्धि - प्रश्न पूछना, ...। (संज्ञानात्मक)
  - ■ भावना- मदद करना, ...। (असंज्ञानात्मक)
  - ■ क्रिया - चित्र बनाना, ...। (मनो-क्रियात्मक)
- साधनसेवी 8-11 आयु वर्ग (किशोरावस्था) में बच्चों के मानसिक विकास की अवस्थाओं पर चर्चा करें।
- चर्चा के लिए प्रश्न कुछ इस प्रकार के हो सकते हैं।
  - ■ जब आप 11-14 आयु वर्ग के थे, तब आप अपने विद्यालय, शिक्षक एवं सहपाठियों के बारे में क्या सोचते थे?

Training Moduel=PART-I_Edited.qxd 12/16/2013 3:09 PM Page 24

■ 11–14 आयु वर्ग में बच्चों में क्या-क्या परिवर्तन होते हैं?

– साधनसेवी किशोरावस्था के परिवर्तनों पर सदन की सहमति बनाएँ तथा प्रतिभागियों को इस आयु वर्ग के प्रति संवेदनशील बनाएँ।

तीसरा सत्र

सीखने के तरीके

गतिविधि -।

उद्देश्य

■ सीखने के विभिन्न तरीकों की समझ विकसित करना।

सामग्री

■ चार्ट पेपर, स्केच पेन

प्रक्रिया

साधनसेवी प्रतिभागियों में से तीन-चार प्रतिभागियों की मदद से निम्न बाल कविता पर 'रोल प्ले' कर सदन में प्रस्तुत करने को कहें।

तितली आई फूल पर

फड़-फड़ करते अपने पंखा,
तितली आई फूल पर।
ऊपर नीचे, नीचे ऊपर,
तितली आई फूल पर।
काटे पत्ते डाली के संग,
हिला-हिलाकर अपने पंखा,
ऊपर नीचे, नीचे ऊपर,
तितली आई फूल पर।

– रोल प्ले की समाप्ति पर साधनसेवी प्रतिभागियों को कौन? कैसे? क्या ? किस? जैसे प्रश्नसूचक शब्दों की सहायता से प्रश्न-निर्माण करने को कहें। जैसे फूल पर कौन आई?, तितली किस पर आई? आदि

– इसके लिए पाँच मिनट का समय आवंटित करें।

– प्रश्न तैयार हो जाने के बाद एक प्रतिभागी एक प्रश्न करें और अन्य कोई इसका उत्तर दें।

– प्राप्त उत्तर पर दोनों प्रतिभागियों-प्रश्न करने वाले और उत्तर देने वाले का धन्यवाद ज्ञापन किया जाए।

- इसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए साधनसेवी किसी प्रतिभागी को प्रश्नों के आलोक में कविता का भावार्थ प्रस्तुत करने को कहें।
- भावार्थ प्रस्तुति के पश्चात् साधनसेवी ये स्पष्ट करें कि –

■ यदि बच्चों को प्रश्नों के सृजन के लिए तैयार करते हैं तो उनमें सम्बन्धित विषय का संदर्भ भी स्पष्ट हो जाता है।

■ उनकी खोजी प्रवृत्ति को बल मिलता है।

■ आत्म संतुष्टि होती है।

■ उनका विषय भारित नहीं होता बल्कि स्वत: स्फूर्त जिज्ञासा सक्रियता, रुचि, सृजनशीलता, निजी सोच या नज़रिया, पहचानने की क्षमता, ग्राह्य क्षमता इत्यादि का विकास होता है।

■ साधनसेवी प्रश्नों के निर्माण पर विस्तृत चर्चा करते हुए यह कह सकते हैं कि प्रश्न ही सीखने का आधार होता है। यदि बच्चों में प्रश्न-निर्माण की आदत विकसित हो गई तो उत्तर ढूँढ़ने का प्रयास वह स्वयं करेगा।

गतिविधि –।।

उद्देश्य

■ सीखने के तरीकों को जानना।

सामग्री

■ चार्ट पेपर, स्केच पेन

प्रक्रिया

साधनसेवी श्यामपट्ट पर एक चित्र बनाएँ। जैसे –

R

- साधनसेवी निम्न प्रश्न करें :-

■ यह चित्र किसका है?

■ आइये चित्र बनाएँ।

- साधनसेवी श्यामपट्ट पर प्रतिभागियों में से किसी को आमंत्रित करके ऐसा ही चित्र बनाने को कहें।

- जब चित्र बन जाए तो आप प्रश्न रखें, यथा
- आपने यह चित्र कैसे बनाया?
- उत्तर कुछ इस प्रकार के हो सकते हैं –
- देखकर।
- नकल करके आदि।
- साधनसेवी इसे समेकित करते हुए सदन में यह राय बनाएँ कि बच्चे भी नकल करके अथवा अपने बड़ों का अनुकरण करके सीखते हैं?
- देखकर।
- नकल करके आदि।
- साधनसेवी इसे समेकित करते हुए सदन में यह राय बनाएँ कि बच्चे भी नकल करके अथवा अपने बड़ों का अनुकरण करके सीखते हैं?
- साथ ही साधनसेवी यह भी स्पष्ट करें कि हमारी सभी क्रियाएँ इतनी नियंत्रित हों कि बच्चे उनका अनुकरण/नकल करें व सीखें।
- इसी प्रकार की गतिविधि बोलकर दुहराने, विभिन्न शारीरिक क्रियाएँ कर दुहराने आदि क्रियाओं के माध्यम से करवायी जा सकती हैं।

गतिविधि -।।।

उद्देश्य

- सीखने के तरीकों को जानना।

सामग्री

- चार्ट पेपर, स्केच पेन

प्रक्रिया

साधनसेवी बड़े सदन में यह प्रश्न रखें कि

- बच्चे और किन-किन तरीकों से सीखते हैं?
- बच्चे सीखी गई बातों को अधिक समय तक कैसे याद रखते हैं?
- प्रत्येक प्रतिभागी से बारी-बारी से श्यामपट्ट पर विचार अंकित करते जाएँ।
- दोनों शीर्षकों के आलोक में विचार लिये जाएँ।
- साधनसेवी विचारों का समेकन करते हुए निम्न बिन्दुओं पर चर्चा करते जाएँ।
- दो तरफा सम्प्रेषण
- समूह शिक्षण
- दलनायक द्वारा
- अभ्यास
- प्रदर्शन/अवलोकन

Training Moduel=PART-I_Edited.qxd 12/16/2013 3:10 PM Page 27

- समस्या-निराकरण
- श्यामपट्ट-कार्य
- प्रकृति भ्रमण / संकलन
- परिवेशीय प्रयोग
- आनंददायी वातावरण इत्यादि।

– सीखने के तरीकों को प्रभावी शिक्षण के लिए किया जाता है।

– एक पाठ तैयार करें जिसमें अधिक-से-अधिक अधिगम तरीकों का उपयोग हो।

चौथा सत्र
शिक्षण-कौशल

उद्देश्य

- शिक्षण की विभिन्न युक्तियों से परिचित कराना।
- शिक्षण-कौशलों का विकास करना।

सामग्री

- श्यामपट्ट, खल्ली, डस्टर, चार्ट पेपर, स्केच पेन।

प्रक्रिया

सदन में साधनसेवी यह प्रश्न रखें –

- अपने शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए आप कौन-कौन सी युक्तियाँ अपनाएँगे?
- सफल शिक्षक बनने के लिए किन-किन कौशलों को जानना ज़रूरी है?

– साधनसेवी बारी-बारी से प्रत्येक प्रतिभागी से एक-एक विचार आमंत्रित करें।

– प्राप्त विचारों का समेकन करते हुए निम्न बिन्दुओं को स्पष्ट करें।

- **प्रश्न करने का कौशल**
- **व्याख्या करने का कौशल**
- **श्यामपट्ट लेखन कौशल**
- **पुनर्बलन कौशल**
- **उद्दीपन भिन्नता का कौशल**

– साधनसेवी सदन में प्रत्येक कौशल को स्पष्ट करते हुए निम्न बातें कह सकते हैं।

प्रश्न करने का कौशल

– प्रश्न कैसे होने चाहिए?

इसके अन्तर्गत निम्न बातें की जा सकती हैं –

- प्रश्न स्पष्ट हों
- छोटे हों / एक बार में एक ही उत्तर हो

- प्रश्नों की भाषा स्पष्ट हो
- सार्थक हो
- प्रश्न परिचित संदर्भों से सम्बद्ध हो

– प्रश्न करने के क्या लाभ हैं?

इसके अंतर्गत निम्न बातें की जा सकती हैं –

- पाठ आगे बढ़ता है।
- उत्सुकता पैदा होती है।
- चिन्तनशील बनते हैं।
- विषय की गहराई में उतरते हैं।
- उनका मूल्यांकन होता है।
- वातावरण–निर्माण होता है।
- बच्चे मुखर होते हैं।
- शिक्षक एवं छात्र के अंतर्संबंध विकसित होते हैं।
- बच्चों में पाठ की समझ विकसित होती है।

व्याख्या करने का कौशल

व्याख्या कैसे करें?

– साधनसेवी सदन की सहमती बनाते हुए निम्न बातें इस आलोक में कह सकते हैं

- मानक भाषा का प्रयोग (स्थानीयता से मानक की ओर)
- भाषा की शुद्धता
- फालतू शब्दों, वाक्यों से बचना
- हँसने हँसाने वाली बात पाठ के अनुरूप हो
- शिक्षण अधिगम सामग्री का उपयोग भी हो
- शिक्षण–बिन्दुओं को दुहराया जाए
- पाठ का अंत रोचक हो
- क्रमवार एक प्रवाह में बोलें
- दृढ़ निश्चय।
- स्थानीय संदर्भों का प्रयोग हो

श्यामपट्ट-लेखन का कौशल

श्यामपट्ट-लेखन कैसे करें ?

- इसके अंतर्गत निम्न बातें की जा सकती हैं।

- यथा संभव बच्चों से श्यामपट्ट का इस्तेमाल कराया जाए।
- लिखावट स्पष्ट एवं मानक हो।
- पंक्तियाँ सीधी हों।
- अक्षर सुन्दर एवं स्पष्ट / सुडौल हों।
- लिखाते समय पीठ बच्चों की ओर न हो।
- श्यामपट्ट पर इस तरह खड़े हों कि बच्चे आपको लिखाते देख सकें।
- बच्चों को उतारने का पर्याप्त समय दें।
- वर्ग से निकलते समय श्यामपट्ट को साफ कर दें।

उद्दीपन भिन्नता का कौशल

उद्दीपन भिन्नता का कौशल क्या है ?

- इसके अन्तर्गत निम्न बातें की जा सकती हैं।

- संदर्भ के साथ हाव-भाव।
- निश्चित उतार-चढ़ाव के साथ बोलना।
- जगह बदलते हुए वर्ग संचालन।
- अंतिम वर्ग तक पहुँचाना।
- मुखाकृति एवं हाथ के भाव बनाना।

पुनर्बलन का कौशल

सकारात्मक पक्षों का पुनर्बलन कैसे करेंगे ?

- इसको स्थाई करने के लिए निम्न बातें की जा सकती हैं।

- शाबाश, सुन्दर, अति सुन्दर।
- मुस्कुरा कर।
- इशारा करके।
- प्राप्त उत्तर लिखाकर।
- श्यामपट्ट पर लिखाकर।
- नाकारात्मक शब्दों के प्रयोग से बचें।

- साधनसेवी प्रतिभागियों में यह स्पष्ट करें कि हर पेशे के अपने कौशल होते हैं उसी प्रकार शिक्षण के अपने कौशल हैं जिनसे लैस होकर ही हम सफल शिक्षण कर पाएँगे।

Training Moduel=PART-I_Edited.qxd 12/16/2013 3:10 PM Page 30

चौथा दिन

प्रथम सत्र

पाठ्य-पुस्तक से परिचय

उद्देश्य

- विशेष प्रशिक्षण केन्द्र पर बच्चों के लिए सेतू पाठ्य-पुस्तकों में अंकित विषय-वस्तु की समझ विकसित करना।

विधि

- समूह कार्य एवं चर्चा

सामग्री

- पुस्तक, चार्ट-पेपर, पेंसिल, स्केच, रबर आदि।

प्रक्रिया

- प्रतिभागियों को छह समूहों में बांट दे, समूह का बंटवारा किसी गतिविधि के माध्यम से करें। महापुरूषों आदि के नाम से समूह का नामाकरण करें। प्रत्येक समूह को अलग-अलग पुस्तक उपलब्ध करायें। साथ में चार्ट-पेपर, स्केच पेन आदि।

अब साधनसेवी सभी समूह को निदेश दें कि निम्न विन्दुओं के आलोक में अवधारणा स्पष्ट करें।

- पाठ्य-पुस्तक का नाम क्या है।
- पाठ्य-पुस्तक का निर्माण किसके सौजन्य से हुआ है।
- प्रकाशन का नाम क्या है।
- आमुख में कही गयी मुख्य बातें क्या है।
- पुस्तक में कौन-कौन सी विषय-वस्तु को लिया गया है।
- क्या अभ्यास के प्रश्न उपयुक्त एवं पर्याप्त हैं।
- किसी एक पाठ का अवलोकन करें तथा बतायें कि उसमें अंकित अवधारणा को स्पष्ट करने हेतु किस प्रक्रिया का सहारा लिया जा सकता है।

समूह कार्य का समय पूर्ण होने पर साधनसेवी बड़े समूह में क्रमवार प्रस्तुति करायें। प्रस्तुति के क्रम में उभरे विन्दुओं पर स्पष्ट समझ बनाते हुए चर्चा को पूर्ण करायें।

निष्कर्ष : पाठ्य-पुस्तक एवं उसमें अंर्तनिहित अवधारणाओं की प्रस्तुतिकरण एवं व्यवहारिक उपयोग की योग्यता विकसित होगी।

Training Moduel=PART-I_Edited.qxd 12/16/2013 3:11 PM Page 31

दूसरा सत्र
सतत् व्यापक मूल्यांकन

प्रक्रिया

- संभाषण विधि से मूल्यांकन की अवधारणा स्पष्ट करने के लिए चर्चा।
- हस्त पत्रक को पढने हेतू प्रतिभागियों के बीच वितरण।
- प्रश्नोत्तर दो समूह बनाकर निम्नांकित तरह के प्रश्न पूछे जा सकते हैं :-
- बच्चे को फेल करना चाहिये या नहीं।
- फेल होने पर कैसा लगता था ?
- परीक्षा पुराने ढंग से होती रहनी चाहिये या सतत् व्यापक मूल्यांकन किया जाना चाहिये ?
- सर्वांगीण विकास की लगातार समीक्षा के लिये क्या करना चाहिये।

  नोट : भाषा, गणित और पर्यावरण के सतत् व्यापक मूल्यांकन में भी TLM का प्रयोग हो।

तीसरा एवं चौथा सत्र
सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन क्या और क्यों ?

Continuous and Comprehensive Evaluation का संक्षिप्त सी.सी.ई. है। जिसका हिन्दी रूपान्तरण सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन होता है।

सतत् का सामान्य अर्थ लगातार होता है। बच्चों के मूल्यांकन के संदर्भ में सीखने की क्रियाओं के दौरान बच्चों द्वारा किये जा रहे कार्यों पर लगातार नजर रखना, उनकी भी सक्रीयता, सहभागिता, कठिनाईयाँ, पहचानते रहना और इनके आधार पर उनके विकास में मदद करनेवाली योजना के साथ कक्षा-शिक्षण में बदलाव लाते रहना, इन सारे चरणों को मिला कर बनता है सतत् आकलन। इसके लिए शिक्षक को किसी समय-परिधि में नहीं बांधा जा सकता है। शिक्षक अब चाहें बच्चों से पूर्व में प्राप्त दक्षता की जाँच किसी तरीके से कर सकते हैं। इसके लिए साप्ताहिक, मासिक, त्रैमासिक, अर्द्धवार्षिक या वार्षिक स्तर पर मूल्यांकन आवश्यक नहीं है, अर्थात् बच्चों के दक्षता-अधिगम का मूल्यांकन लगातार होता रहेगा।

हम शिक्षक के दौरान यह कार्य लगातार करते ही रहते हैं और उसके अनुसार बच्चों की मदद भी करते हैं अत: यह कोई कठिन क्रिया नहीं कि हौवा बनाया जाय। इसके लिये हमें अपने अवलोकन का अभिलेख रखाना है और उस अभिलेख के आधार पर हर बच्चे का सीखाना सुनिश्चित करना है।

सीखने-सिखाने के संदर्भ में व्यापक का अर्थ उन सभी दक्षताओं से है जो बच्चों के

सर्वांगीण विकास के लिये आवश्यक है अर्थात् इसमें संज्ञानात्मक एवं सहसंज्ञानात्मक दोनों पहलुओं पर समान रूप से जोर दिया जाता है। संज्ञानात्मक पक्ष में हम मुख्यत: पाठ्यक्रम की दक्षताओं को शामिल करते हैं। सह संज्ञानात्मक पक्ष में हम बच्चों के व्यक्तित्व के उन पहलुओं को शामिल करते हैं जिनको मापने या मुल्यांकित करने का कोई ठोस तरीका हमारे पास नहीं है अर्थात् बच्चों के काम की आदत, स्वास्थ्य की देखभाल, शारीरिक शिक्षा, सौन्दर्य-बोध तथा कलात्मक क्षमता जैसे बहुत से ऐसे क्षेत्र हैं जिनका आकलन अंको के आधार पर नहीं किया जा सकता है इनको मापने का एकमात्र तरीका सतत् अवलोकन ही है।

वांछित गुणों के सापेक्ष बच्चों के सीखाने के बारे में तथ्यों का अवलोकन करते रहना और इसके जरिये बच्चे के विकास और सीखाने सिखाने की प्रक्रिया में सुधार लाना। अपने ही काम का लगातार विश्लेषण करते रहना कि वर्त्तमान स्थिति क्या है और आगे के काम के लिए क्या जरूरी है? इन दोनों को मिलाकर योजना का निर्माण, पुननिर्माण करते रहना ही मूल्यांकन है।

पारंपरिक परीक्षाएँ सवालों पर आधारित होती है, ये सवाल शिक्षकों द्वारा तय किये जाते हैं। इन सवालों से दक्षताओं का सम्बन्ध नहीं। बच्चों और अभिभावकों दोनों में परीक्षा का भय होता है। जबकि सी.सी.ई. के द्वारा संज्ञानात्मक और सह संज्ञानात्मक पहलुओं पर समान ध्यान और बच्चे के सीखने के दौरान आनेवाली चुनौतियों को दूर करने का प्रयास किया जाता है, यह प्रक्रिया में सुधार का साधन है।

प्रत्येक बच्चे के स्तर के अनुरूप योजना बनाने, लागू करने में मददगार है सी.सी.ई.। इसके जरिये बच्चों का प्रक्रिया के पूर्व, दौरान और बाद में आकलन करते रहते हैं और जरूरत के मुताबिक प्रक्रिया के दौरान उसमें बदलाव भी करते रहते हैं। सी.सी.ई. में बच्चों के सर्वांगीण विकास की लगातार समीक्षा होती रहती है। यह शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का अनिवार्य हिस्सा है, जिसमें बच्चे और शिक्षक मिलकर कक्षा में सीखने की क्रियाओं के बारे में तत्काल निर्णय लेते हैं – क्या करना है, क्या नहीं करना है और कैसे करना है?

बच्चों की जिज्ञासा के अनुरूप और रूचि के अनुसार कक्षा में प्रक्रियाएँ तय कर शिक्षण कार्य करना। क्योंकि मूल्यांकन केवल एक शैक्षिक क्रिया नहीं बल्कि इसके द्वारा बच्चे का आगे बढ़ना सुनिश्चित करना है और बच्चे के शारीरिक विकास और व्यवहारगत बदलाओं को भी देखा जाता है।

सतत् व्यापक मूल्यांकन

- बच्चों के क्षमता-विकास में सहायक है।
- बच्चों की व्यक्तिगत और विशेष जरूरतों की पहचान हेतू आवश्यक है।
- एक अवधि विशेष में बच्चे की प्रगति और उसमें आनेवाले परिवर्त्तनों का पता लगाने हेतू आवश्यक है।

Training Moduel=PART-I_Edited.qxd 12/16/2013 3:11 PM Page 33

- सतत् चलनेवाली आवश्यक प्रक्रिया है।
- बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतू आवश्यक है।
- उद्देश्यों की प्राप्ति हेतू आवश्यक है।
- शैक्षिक राणनीति हेतू आवश्यक है।
- उपचारात्मक शिक्षा हेतू आवश्यक है।
- सीखाने-सिखाने की प्रक्रिया को बेहतर बनाने हेतू आवश्यक है।

पाँचवा दिन

प्रथम एवं द्वितीय सत्र

भाषा की कुशलताएँ

उद्देश्य

- भाषा की कुशलताओं से परिचित कराना।
- भाषायी कुशलताओं में दक्ष बनाना।
- शुद्ध-शुद्ध बोलने एवं पढ़ने की क्षमता विकसित करना।

सामग्री

- अख़बार एवं पत्रिकाओं के कुछ अंश।

प्रक्रिया

साधनसेवी सदन को चार समूहों में बाँट दें। एक समूह को गिनती पढ़ने, एक समूह को अंग्रेजी वर्णमाला पढ़ने, एक समूह को हिन्दी-वर्णमाला पढ़ने का निर्देश देंगे। एक समूह को बीच में बैठाकर ऊपर की ओर देखने का निर्देश देंगे। बोलने वाले तीनों समूह के प्रतिभागियों को आपस में मिलाकर उन्हें एक गोलाई में बैठा दें और बीच में बिना बोलने वाले समूह को बैठा दें। अब तीनों समूह को एक साथ बोलने का निर्देश दें। बीच वाले समूह के सदस्य ऊपर की ओर देखते हुए यह पहचानने की कोशिश करेंगे कि कौन-सा प्रतिभागी हिन्दी वर्णमाला, कौन अंग्रेजी वर्णमाला और कौन गिनती बोल रहा है?

इस गतिविधि के बाद प्रतिभागियों से प्रश्न करें कि -

- इस गतिविधि में क्या हो रहा था?
- प्रतिभागियों की पहचान करने में क्या कठिनाई आ रही थी और ऐसा क्यों हो रहा था?

प्राप्त उत्तरों को समेकित करते हुए साधनसेवी यह स्पष्ट करेंगे कि सुनने के लिए कुछ आवश्यक बातों का होना ज़रूरी है। इसके अभाव में सुनना एक कठिन कार्य है।

सुनने के लिए ज़रूरी है कि सुनने पर पूरा ध्यान दिया जाए, आवाज़ की ऊँचाई पर्याप्त हो। सुना जानेवाला विषय रुचिकर हो। उसे स्पष्ट रूप से सुनाया जाए। कोलाहल के बीच सुनना कठिन होता है।

साधनसेवी प्रतिभागियों से एक और प्रश्न करें कि – कौन आवाज़ सुनने में अच्छी लगती है? प्राप्त उत्तरों को समेकित करते हुए प्रतिभागियों से आग्रह करें कि कुछ ऐसी ही आवाज़ सुनाएँ / बोलें। तदुपरान्त चर्चा करें कि मीठी आवाज़, उतार चढ़ाव के साथ बोली जाने वाली / भाव के साथ / पर्याप्त ऊँचाई के साथ बोली जाने वाली आवाज़ सुनना अच्छा लगता है।

अर्थात् सुनने और बोलने का आपस में सम्बन्ध है और सुनने तथा बोलने दोनों के लिए कुछ आवश्यक शर्त्तों का पालन करना पड़ता है। बोलने में शब्दों के उच्चारण पर भी पर्याप्त ध्यान देना चाहिए। स, श, न, ण एवं ह्रस्व, दीर्घ के उच्चारण में आने वाले। शर्त्तों का ज्ञान करना चाहिए। अब बारी–बारी से सभी प्रतिभागियों से किसी पुस्तक / अख़बार के अंश को हाव–भाव के साथ अपेक्षित शर्त्तों के साथ पढ़ने को कहें।

साधनसेवी, यह भी स्पष्ट करें कि बच्चों को सर्वप्रथम सुनने एवं बोलने के अधिकाधिक अवसर उपलब्ध कराने चाहिए। बच्चों से उनके अपने अनुभवों के संबंध में बातचीत, उनकी विषयगत रुचिकर पाठ्य वस्तुओं का चुनाव कर भी उन्हें सुनने एवं बोलने/सुनाने को प्रेरित किया जा सकता है। कविता, कहानी, चुटकुले आदि बच्चों की पसंद होते हैं अतएव केन्द्र पर उनका उपयोग कर बच्चों की सुनने एवं बोलने की क्षमता में वृद्धि की जा सकती है। इसके अतिरिक्त, फसलों, जीव–जंतुओं, घर–परिवार के संबंध में उनके अनुभवों को भी सुनने बोलने की क्षमता विकसित करने में प्रयोग किया जा सकता है।

बच्चे पढ़ाई के प्रति तत्पर हों इसके लिए भी यह उपयुक्त है। अतएव केन्द्र पर प्रारंभ में इन बच्चों को सुनने, सुनाने का पर्याप्त अवसर दिया जाना इनके व्यक्तित्व के विकास के लिए अत्यावश्यक है।

तृतीय एवं चतुर्थ सत्र

भाषा की कुशलताएँ कैसे विकसित करें?

उद्देश्य

- **'प्रयास'** हिन्दी–1 में निहित दक्षताओं से अवगत कराना।
- पाठ को प्रस्तुत करने के विभिन्न तरीकों से परिचित कराना।
- शिक्षण अधिगम सामग्री, सीखाने में सहायक है, की समझ देना।
- एक ही पाठ को विविध ढँग से देखने की क्षमता उत्पन्न करना।

सामग्री

Training Moduel=PART-I_Edited.qxd 12/16/2013 3:11 PM Page 35

■ प्रयास हिन्दी–1 की प्रतियाँ

प्रक्रिया

■ प्रतिभागियों को नौ समूहों में विभाजित कर निम्नवत् कार्य का बँटवारा कर दें।

समूह संख्या	निर्धारित कार्य	पाठ
1	पृष्ठ संख्या 1–5	1
2	पृष्ठ संख्या 7–16	2–3
3	पृष्ठ संख्या 17–33	4
4	पृष्ठ संख्या 34–39	5, 6, 7,
5	पृष्ठ संख्या 40–51	7
6	पृष्ठ संख्या 52–55	8
7	पृष्ठ संख्या 56	
8	पृष्ठ संख्या 57–58	
9	पृष्ठ संख्या 59–62	9

समूह एवं कार्य–विभाजन के पश्चात् प्रत्येक समूह को निम्न बिन्दुओं के आलोक में कार्य करने का निर्देश दें :–

I. पाठ को पढ़ने के उपरान्त बच्चे क्या–क्या सीखेंगे अर्थात् उनमें किन–किन दक्षताओं का विकास होगा ? सूची बनाइए।

II. उक्त पृष्ठ / पाठ को पढ़ाने हेतु किन–किन सहायक शिक्षण अधिगम सामग्रियों की आवश्यकता पड़ेगी ? सूची बनाइए।

III. प्रदत्त पृष्ठों के पाठों की प्रस्तुति करके दिखाइये कि इन्हें बच्चों को कैसे सिखाएँगे ? एक से अधिक अधिगम बिन्दु की स्थिति में अलग–अलग पृष्ठ की प्रस्तुति एक ही समूह के अलग–अलग व्यक्ति करेंगे। गतिविधियाँ करके दिखाएँ।

तैयारी हेतु 4–5 मिनट का समय दें जिसमें समूह का प्रत्येक व्यक्ति मिलकर विकसित दक्षताओं की सूची, शिक्षण–सामग्रियों की सूची एवं प्रस्तुति की तैयारी करेंगे।

प्रस्तुति के क्रम में उभरे बिन्दुओं पर चर्चा करें तथा चर्चा में निम्न बिन्दुओं को आधार बनाएँ–

पाठ – 1 (चित्रों को पहचानिए)

■ बच्चों से वृक्षों के चित्र दिखाते हुए उनका नाम, भाग, आकार, उपयोग, विशेषताएँ

इत्यादि के संबंध में बातचीत करें।

- शिक्षक स्वयं कम एवं बच्चों को अधिकाधिक बोलने का अवसर दें।
- पशुओं के उपयोग, रंग, आवाज़, रहने का स्थान, भोजन इत्यादि से संबंधित बच्चों के अनुभवों को स्वयंसेवक धैर्य पूर्वक सुनें तथा बच्चों की वैसी जिज्ञासा जिसका जवाब कक्षा में उपस्थित दूसरे बच्चों के पास न हो, का समाधान भी करें।
- इसी प्रकार पक्षी, जलचर, अन्य जीव, फूल, सब्ज़ी, प्राकृतिक दृश्य, यातायात के साधन, संचार के साधन, घरेलू समान इत्यादि के संबंध में बच्चों के अनुभवों को पहले जानें तथा बाद में अपनी जानकारी देकर उनका ज्ञान विस्तार कराएँ।
- पुस्तिका में अंकित चित्रों के अतिरिक्त भी इन्हीं से संबंधित अन्य नाम एवं जानकारियाँ भी बच्चों के पास होती हैं – उन्हें भी निकलवायें।
- बच्चों से हमेशा प्रेमपूर्वक एवं आदर के साथ बात करें।
- बच्चों को उनके नाम से पुकारें तथा उनकी कही बात को पर्याप्त महत्त्व दें।
- जो बच्चे कम बोलते हों या जो नहीं बोलते हों उन्हें बार-बार बोलने का अवसर प्रदान करें।
- प्रारंभ में बच्चों से उनकी स्थानीय बोली में बात करें तथा उसी बोली में उन्हें अपनी बात रखने का पूरा अवसर दें।
- पुस्तक में दी गई गतिविधियाँ बदल-बदल कर करवाएँ।

पाठ – 2

- चित्र बनाने का अभ्यास अँगुलियों की माँसपेशियों को मजबूत करने के लिए है। अतएव ऐसे अन्य अभ्यास भी बार-बार करवाएँ। मिट्टी, बालू, स्लेट, श्यामपट्ट पर अँगुली चलाने की क्रिया भी बार-बार करवाएँ।
- वस्तुओं से संबंधित छोटी कविताओं का संकलन कर बच्चों से गवाएँ।

पाठ – 3

- चित्र दिखाएँ, उसकी पहचान कराएँ, वह कहाँ से मिलता है? उसका क्या उपयोग है? के संबंध में बातचीत के पश्चात् 'शब्द' तदुपरांत अक्षरों पर 'ध्यान' आकृष्ट कराएँ।
- बार-बार इसका अभ्यास कराएँ।
- पुस्तक में अभ्यास कार्य पेंसिल से कराएँ।
- वर्णित अक्षरों से बनने वाले नये शब्द बच्चों से बनवाएँ (पूछें)
- वर्ण पहचानने की गतिविधि तब तक बार-बार कई दिनों तक बच्चों से करवाई जाए जबतक कि सभी बच्चे सभी वर्णों को पहचानने न लग जाएँ। अपेक्षाकृत शैक्षिक रूप से पिछड़े बच्चों को ज़्यादा मौका देना लाभकारी होगा।

Training Moduel=PART-I_Edited.qxd 12/16/2013 3:12 PM Page 37

पाठ - 4 एवं 5 - व्यंजन वर्ण को जानिए एवं संयुक्ताक्षर जानिए।

- चित्र दिखाएँ तथा बच्चों से उससे संबंधित बातचीत करें।
- इन वस्तुओं पर कोई कविता का संकलन कर बच्चों को गवाएँ।
- 'शब्दों' एवं 'अक्षरों' पर ध्यान आकृष्ट करावाएँ।
- अक्षरों से बनने वाले शब्दों में से संबंधित अक्षरों की पहचान कराइए।
- ऐसे अन्य शब्दों का निर्माण कर अक्षरों की पहचान बच्चों से करवाएँ।
- अक्षरों को लिखाने का भी बार-बार अभ्यास करवाएँ। लेकिन निश्चित सीमा तक ही, ताकि बच्चे ऊबें नहीं।
- खेल/गतिविधि का अभ्यास बच्चों से बार-बार करवाएँ।
- सही जगह पर नहीं कूदनेवाले बच्चों ने किस घर में छलाँग लगाई ? शेष बच्चों से पूछें।
- ग़लत छलांग लगाने वाले बच्चों का भी उत्साहवर्द्धन करें तथा उन्हें बार-बार मौका दें।
- वर्णमाला लिखाने का बार-बार अभ्यास कराएँ।

पाठ - 6 एवं 7 - बिना मात्रा वाले, एक मात्रा वाले शब्द जानिए

- बच्चों को बोल-बोलकर पढ़ने का भरपूर अवसर दें।
- अर्थपूर्ण शब्दों के संबंध में बच्चों के अनुभवों को जानने का प्रयास करें।
- हठ, भटक, मटक, चख जैसे शब्दों का अभिनय भी करवाएँ।
- शब्दों को जोड़ना (न+ल=नल) एवं शब्दों को तोड़ना (जैसे: नल=न+ल) जैसी गतिविधियाँ बच्चों से खूब कराएँ। इस क्रम में बच्चों को स्वयं नए शब्द बनाने, उसे तोड़ने को प्रेरित करें।
- मात्राओं की पहचान एवं उच्चारण भी बताइए। इसके लिए दो मात्राओं का एक साथ उच्चारण करें। जैसे - उ, ऊ, इ, ई आदि।

पाठ - 8 - कुछ और जानिए

- 'र' की मात्रावाले शब्दों के उच्चारण से बच्चों को परिचित कराएँ।
- 'ऋ' की मात्रावाले शब्दों के उच्चारण से बच्चों को परिचित कराएँ।
- इन मात्राओं से युक्त शब्दों को बार-बार पढ़वाएँ।
- संयुक्ताक्षरों की निर्माण-प्रक्रिया एवं उच्चारण बच्चों को समझाएँ।
- बच्चों को विभिन्न वर्णों के मेल से शब्द-निर्माण करना सिखाएँ।
- कविता की प्रस्तुति हाव-भाव एवं टी.एल.एम. के साथ करें।
- बच्चों से भी इसकी सामूहिक प्रस्तुति कराएँ।

- बच्चों से बुझौवल पूछें। कुछ बुझौवल बच्चों को भी पूछने को कहें। शेष बच्चे उनका उत्तर बताएँ।

पाठ – 9 – बारहखड़ी

- बच्चों से प्रतिदिन बारहखड़ी का अभ्यास कराइए।
- वर्णों से शब्द बनाने की गतिविधि का बार–बार बच्चों से अभ्यास कराइए।

सभी प्रस्तुतिओं के उपरान्त साधनसेवी स्पष्ट करें कि सुनना, बोलना, पढ़ना एवं लिखना भाषा सीखाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। प्रारंभिक अवस्था में सुनने एवं बोलने के अधिकाधिक अवसर उपलब्ध कराए जाने चाहिए ताकि बच्चों में भाषा सीखाने की रुचि जाग्रत हो सके। सीखाने की प्रक्रिया में बच्चे के अपने अनुभवों का उपयोग भी अत्यावश्यक है। बच्चे कविता, कहानी, पहेली खूब पसंद करते हैं अतएव बच्चे की कविताओं को सुनना, बाल–कविता एवं कहानियों का संकलन कर सुनाना भी बच्चों को भाषा की ओर आकर्षित करता है। शब्दों का निर्माण वर्णों की पहचान की अधिकाधिक गतिविधियाँ बच्चों की जानकारियों को पुष्ट करती है अतएव हमें अपनी शिक्षण–प्रक्रिया में उपलब्ध सभी विधियों को अपनाना चाहिए।

भाषा में प्राप्त कुशलताओं का विवरण

i. अपने परिवेश के वृक्ष, पशु, पक्षी, जीव–जंतु, फूल, फल, सब्ज़ी, प्राकृतिक दृश्य, यातायात के साधन, संचार के साधन एवं घरेलू सामग्रियों के नाम जानता है तथा उनके संबंध में बताता है।
ii. स्वर वर्णों को पहचानता है। शब्दों में उन्हें ढूँढ़ लेता है तथा उन्हें लिखने का भी अभ्यास करता है।
iii. संबंधित कविताओं का भी पाठ करता है।
iv. व्यंजन वर्णों को शब्दों में से ढूँढ़ लेता है। उसे स्वतंत्र रूप से भी पहचानता है तथा उन्हें लिख लेता है।
v. संयुक्ताक्षर को भी पहचानता है तथा उसका भी उच्चारण कर लेता है। पहचानता है एवं पढ़ता है।
vi. सरल वाक्यों को पढ़ लेता है।
vii. शब्दों को वर्णों में विभक्त कर लेता है तथा विभक्त वर्णों को शब्दों में परिवर्तित कर लेता है।
viii. मात्रावाले शब्दों को भी पढ़ लेता है।
ix. शब्द में मात्राओं को जोड़कर नये शब्दों का निर्माण कर लेता है।
x. वर्णों से नये शब्दों का निर्माण कर लेता है।
xi. बिना मात्रा एवं मात्रा वाले शब्दों का निर्माण कर उसे पढ़ता है।

Training Moduel=PART-I_Edited.qxd 12/16/2013 3:12 PM Page 39

xii. बारहखड़ी एवं वर्णमाला का क्रमवार पठन कर लेता है तथा इसका उपयोग नये शब्दों के निर्माण में करता है, इत्यादि

साधनसेवी स्पष्ट करें कि उपर्युक्त दक्षताएँ सभी बच्चों में आ जाएँ। इसके लिए आवश्यक है कि हम वर्णित गतिविधियाँ अधिकाधिक करवाएँ। बच्चे की मानसिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए कुछ समय के उपरान्त गतिविधि एवं उसके स्वरूप में परिवर्तन कर दें। उन युक्तियों के परिणाम स्वरूप सीखना एवं सिखाना आसान प्रक्रिया हो जाएगी।

छठा दिन

प्रथम सत्र

गणित–शिक्षण हेतु वातावरण–निर्माण

गतिविधि - i

उद्देश्य

- गणित हमारे दैनिक जीवन से जुड़ा है, इसका बोध कराना।
- गणित–शिक्षण हेतु परिवेशीय वस्तुओं / परिस्थितियों का उपयोग करना।
- गणित को आनंददायी एवं प्रभावी बनाने की दक्षता विकसित करना।

सामग्री

- 1 से 9 तक की संख्या कार्ड ।
- संख्या गीत।

प्रक्रिया

साधनसेवी प्रशिक्षण में उपलब्ध सामग्री को ध्यानपूर्वक देख लेने तथा यादि कर लने का निर्देश दें।

साधनसेवी हाव–भाव के साथ नीचे लिखे गीत को गाँए तथा प्रतिभागियों से दुहराने के लिए कहें –

- बोलो जी, बोलो जी, बोलो जी – कमरे में कितनी खिड़कियाँ ?
- गिनो जी, गिनो जी, गिनो जी – कमरे में कितने दरवाज़े ?
- बताओ जी, बताओ जी, बताओ जी – घोड़े के कितने पैर ?
- सोचो जी, सोचो जी, सोचो जी – साइकिल के कितने पहिए?
- समझो जी, समझो जी, समझो जी – गुल्दस्ते में कितने फूल?

Training Moduel=PART-I_Edited.qxd 12/16/2013 3:12 PM Page 40

उत्तर के रूप में निम्न पंक्तियाँ दुहराई जा सकती हैं –

- हैं जी, हैं जी, हैं जी – कमरे में तीन खिड़कियाँ ?
- हैं जी, हैं जी, हैं जी – कमरे में एक दरवाज़ा?
- हैं जी, हैं जी, हैं जी – घोड़े के चार पैर?
- हैं जी, हैं जी, हैं जी – साईकिल में दो पहिए?
- हैं जी, हैं जी, हैं जी – गुल्दस्ते में पाँच फूल?

साधनसेवी गतिविधि समाप्ति पर सदन में गणित शिक्षण के आलोक में चर्चा करें। चर्चा के लिए सदन के समक्ष कुछ इस प्रकार के प्रश्न रखे जा सकते हैं –

- प्राप्त उत्तरों को श्यामपट्ट पर अंकित करते जाएँ। निष्कर्षत: साधनसेवी गणित को दैनिक जीवन में उपयोग बताते हुए गणितीय संक्रियाओं की समझ बताएँ तथा इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि जीवन में गणित की जरूरत हर क्षण पड़ती है। सुबह से शाम तक हम अनेकानेक गणितीय संक्रियायें करते हैं। अगर हम गणित की जानकारी नहीं रखें तो कई परेशानियाँ आ सकती है। अतएव यह आवश्यक है कि बच्चों के समक्ष गणित को सरल, मनोरंजक एवं रूचिकर ढंग से रखा जाए ताकि बच्चों को यह विषय कठिन न लगे।

दूसरा सत्र

शून्य की समझ

उद्देश्य

शून्य का मतलब 'कुछ नहीं' की समझ विकसित करना

सामग्री

चार्ट पेपर, कंकड़, कटोरी

प्रक्रिया

- साधनसेवी प्रतिभागियों को गोल घेरे में बैठाएँ और स्वयं बीच में एक कटोरी में कुछ कंकड़ लेकर बैठ जाएँ।
- कंकड़ों को गिनकर प्रतिभागियों को दिखाएँ।
- साधनसेवी एक-एक कर कटोरी से कंकड़ निकाल कर रखते जाएँ और प्रतिभागियों से पूछते रहें कि अब कटोरी में कितने कंकड़ बचे? मान लें कि साधनसेवी ने कटोरी में 4 कंकड़ रखे थे। उनमें से एक बाहर निकाला तो कितने बचे? प्रतिभागी बताएँगे 'तीन' फिर 'दो' फिर 'एक'। फिर एक कंकड़ निकालें और पूछें – अब कितने बचे। प्रतिभागी कहेंगे – कुछ नहीं।

- साधनसेवी यह बताएँ कि 'जब कुछ नहीं बचता' तो उसे शून्य कहते हैं और उसे ऐसे लिखाते हैं – '0'

  साधनसेवी श्यामपट्ट पर भी '0' लिखते हुए बताएँ अर्थात् शून्य का मतलब 'कुछ नहीं' होता है।

गतिविधि – ii

- प्रतिभागियों को U आकार में बैठाएँ। आगे वाले प्रतिभागी से शुरू करते हुए गिनती गिनाएँ जैसे – 1, 2, 3, 4, 5, ...
- गिनती जहाँ समाप्त होती है, ठीक वहाँ से फिर उल्टी गिनती गिनवाएँ। जैसे अगर प्रतिभागियों की संख्या 40 होने पर गिनती 40 पर समाप्त हुई थी तो अब उलटी गिनती वहाँ से शुरू कराएँ। जैसे – 40, 39, 38, 37, 36... 1

  इस प्रकार सबसे आगे वाले प्रतिभागी पर गिनती की संख्या 1 आएगी।
- अब प्रतिभागियों से पूछें सबसे आगे अर्थात् 1 संख्या वाले प्रतिभागी से पहले कौन से प्रतिभागी हैं? अर्थात् 1 से पहले कौन-सी संख्या आएगी ? प्रतिभागी बोलेंगे – 'कुछ नहीं'।

  यहाँ स्पष्ट करें कि 'कुछ नहीं' ही शून्य है।

गतिविध – iii

- साधनसेवी नीचे लिखी कहानी प्रतिभागियों को सुनाएँ –

सात पूँछ का चूहा

एक था चूहा। उस चूहे की पूँछें थीं – सात। सब उसे चिढ़ाते – सात पूँछ का चूहा, सात पूँछ का चूहा

- प्रतिभागी से कहें – कितने पूँछ का चूहा ?

  वे बोलेंगे – सात पूँछ का चूहा?
- कहानी को आगे बढ़ाते हुए कहें –

आख़िर तंग आकर चूहा गया नाई के पास। उसने नाई से कहा – नाई दादा, मेरी एक पूँछ काट दो। नाई ने उसकी एक पूँछ काट दी। अब चूहे के पास बची छः पूँछें।

अगले दिन जैसे ही चूहा बाहर निकला, सब उसे चिढ़ाने लगे – छः पूँछ का चूहा, छः पूँछ का चूहा। (प्रतिभागियों से बोलवाएँ – छः पूँछ का चूहा, छः पूँछ का चूहा) चूहा फिर नाई के पास गया और बोला – नाई दादा, मेरी एक पूँछ और काट दो। नाई ने उसकी एक पूँछ काट दी। अगले दिन फिर सब उसे चिढ़ाने लगे – पाँच पूँछ का चूहा, पाँच पूँछ का चूहा। (प्रतिभागियों से फिर दोहरवाएँ – पाँच पूँछ का चूहा, पाँच पूँछ का चूहा)। चूहा गया फिर नाई के पास और बोला – मेरी एक पूँछ और काट दो। अब चूहे

Training Moduel=PART-I_Edited.qxd 12/16/2013 3:13 PM Page 42

के पास बची – बस चार पूँछें पर सब उसे फिर चिढ़ाने लगे – चार पूँछ का चूहा, चार पूँछ का चूहा। प्रतिभागियों से फिर दुहरवाएँ। चूहा गया नाई के पास। नाई ने उसकी एक पूँछ फिर काट दी । अब बची तीन पूँछें। पर अब भी सब चिढ़ाने लगे, तीन पूँछ का चूहा, तीन पूँछ का चूहा। उसने फिर एक पूँछ कटवाई लेकिन फिर उसे सुनना पड़ा – दो पूँछ का चूहा, दो पूँछ का चूहा। उसने फिर एक पूँछ कटवा ली। फिर भी सब उसे चिढ़ाते – एक पूँछ का चूहा, (प्रतिभागियों से दुहरवाएँ)। अब गुस्से में चूहा नाई के पास गया और अपनी आखिरी पूँछ भी कटवा ली। अब चूहे के पास कोई पूँछ ही नहीं बची। लेकिन, फिर भी उसे सब चिढ़ाते – बिना पूँछ का चूहा, बिना पूँछ का चूहा।

साधनसेवी प्रतिभागियों से दुहरवाते हुए पूछें – चूहे को अंत में कितनी पूँछें बचीं।

वे बताऐंगे – एक भी नहीं अर्थात् 'कुछ नहीं' इसे 'शून्य' की अवधारणा को जोड़ते हुए चर्चा करें।

तीसरा सत्र

दस (10) एवं इकाई–दहाई की समझ

उद्देश्य

- 9 के आगे की संख्या की समझ बनाना।
- शून्य का किसी संख्या के साथ जोड़ने की समझ बनाना।
- 10 की समझ बनाना।
- इकाई और दहाई की समझ बनाना।

सामग्री

कंकड़, सीकें, माचिस की तीलियाँ, रबर बैंड

प्रक्रिया

- प्रतिभागियों को गोल घेरे में बैठाएँ
- किन्हीं दो प्रतिभागियों को बुलाएँ और उन्हें घेरे के बीच में आमने–सामने बैठाएँ।
- दोनों प्रतिभागियों के बीच में 10 कंकड़ रखें।
- एक प्रतिभागी से 1 कंकड़ निकाल कर अलग रखने के लिए कहें। – श्यामपट्ट पर लिखें– 1। फिर एक और कंकड़ निकाल कर रखे गए कंकड़ के साथ रखने के लिए कहें।
- दूसरे प्रतिभागी से अलग रखे कंकड़ों को गिनवाएँ 1–2 कंकड़, श्यामपट्ट पर लिखें–

2।

- पुन: पहले प्रतिभागी से एक और कंकड़ अलग रखे गए दोनों कंकड़ों के साथ मिलाकर रखवाएँ।
- दूसरे से गिनवाएँ – 3 कंकड़। श्यामपट्ट पर लिखें – 3।
- इसी प्रकार 9 कंकड़ होने तक यह क्रिया करवाएँ। श्यामपट्ट पर संख्याओं को लिखाते जाएँ। पुन: आख़िरी बचे कंकड़ को मिलवाएँ और पूछें कितने कंकड़ – 10 कंकड़। श्यामपट्ट पर लिखें 10 और बताएँ 9 के बाद की संख्या 10 को 1 के साथ शून्य मिलाकर लिखाते हैं।
- साधनसेवी इसी प्रकार दो अन्य प्रतिभागियों को बीच में बुलाकर 10 बनाने की क्रिया कराएँ।
- प्रतिभागियों के तीन या चार जोड़ों से अलग-अलग 10-10 बनाने की क्रिया कराएँ। बाद में यह भी बताएँ कि 10 में एक और कंकड़ मिलाने से संख्या 11 बनती है। इस 11 में से 10 कंकड़ को फिर अलग रखाने के लिए कहें। पूछें 10 हटा लेने पर कितने कंकड़ बचे?

  प्रतिभागी कहेंगे – 1।

  अर्थात्, 11 में 10 और 1 कंकड़ हैं। श्यामपट्ट पर लिखें इसी प्रकार 11 में 1 और कंकड़ मिलाने से बनता है – 12।

  इसमें से भी 10 कंकड़ अलग कराएँ और पूछें 10 अलग करने पर कितने कंकड़ बचे- 2।

  अर्थात् 12 में 10 और 2 कंकड़ हैं। श्यामपट्ट पर लिखें 12 कंकड़ = 10 कंकड़ और 2 कंकड़।
- इस प्रकार यह क्रिया 13, 14, 15, 16, 17, 18, 19 के लिए करें। श्यामपट्ट पर ऊपर की तरह लिखाते जाएँ।
- अब यह पूछें कि अगर हम 10 कंकड़ों को कंकड़ों का एक बंडल मान लें तो 11 कंकड़ों में कंकड़ के कितने बंडल होंगे और बंडल के बाद शेष कितने कंकड़ बचेंगे। प्राप्त उत्तर निम्नांकित ढँग से श्यामपट्ट पर लिखें – 11 कंकड़ में – बंडल : 1 – शेष कंकड़ : 1

  इसी प्रकार 12, 13, 14... 19 कंकड़ों में बंडल और शेष कंकड़ पूछते हुए ऊपर की तरह श्यामपट्ट पर बंडल और शेष कंकड़ की संख्या लिखाते जाएँ।
- अब बताएँ 10 के एक बंडल को एक दहाई तथा शेष बचे हरेक कंकड़ को इकाई कहते हैं।

अर्थात् 11 कंकड़ों में – 1 दहाई कंकड़ और 1 इकाई कंकड़
उसी प्रकार 12 कंकड़ों में – 1 दहाई कंकड़ और 2 इकाई कंकड़

- श्यामपट्ट पर लिखाकर दहाई और इकाई की समझ विकसित करें और बतावें कि हम अपने केन्द्र के बच्चों से इसी प्रकार गतिविधि के माध्यम से इसी प्रकार गतिविधि से इकाई और दहाई की समझ विकसित करने का प्रयास करेंगे।
- यह भी बतावें कि हम अपने केन्द्रों पर कंकड़ कि तरह सुलभ सामग्री यथा सींक, पत्ते इत्यादि का उपयोग कर उपर्युक्त अवधारणा विकसित कर सकते हैं।

अवधारणा की समझ पक्की करना

- इकाई–दहाई की अवधारणा की समझ की जाँच एवं उसके पक्कीकरण के लिए साधनसेवी 10 से 30 तक के संख्याओं की कार्डों का सेट बना लें।
- प्रतिभागियों को सीकें अथवा माचिस की तीलियों और रबर बैंड देकर गोल घेरे में बैठाएँ।
- कार्डों को अच्छी तरह फेंट लें। अब एक प्रतिभागी से कार्डों की गड्डी में से एक कार्ड निकलवाएँ। माना कि कार्ड निकला – 14।
- प्रतिभागियों से कहें संख्या 14 के अनुसार इकाई और दहाई में सीकों को अपने आगे सजाएँ।
- इसके बाद शेष बचे कार्डों को प्रतिभागियों में एक–एक कर वितरित करते हुए पुन: अपने कार्ड में अंकित संख्यानुसार सीकों को अपने आगे इकाई और दहाई के अनुसार सजाने के लिए कहें।
- कुछ प्रतिभागियों को श्यामपट्ट पर बुलाकर इकाई और दहाई अंकित करते हुए अपने सामने सजाई गई सीकों की संख्यानुसार इकाई और दहाई के सामने संख्याएँ लिखाने के लिए कहें।
- सीकों के माध्यम से यहीं संख्याओं के बड़े छोटे होने की समझ विकसित करें। इसके लिए तीन–चार संख्याएँ बोलकर प्रतिभागियों को संख्यानुसार सींके रखाने के लिए कहें तथा अवलोकन करते हुए पूछें कि किस संख्या के लिए सींकों की संख्या ज़्यादा है। जिसमें सबसे ज़्यादा सीकें हैं वह संख्या सबसे बड़ी एवं सबसे कम सीकों वाली संख्या सबसे छोटी है – ऐसा बताएँ।
- साथ ही इसी क्रम में दो बराबर वाली भी संख्या बताकर सीकें सजवाएँ।
- अब बड़े, छोटे और बराबर के संकेत चिह्नों के बारे में बताते हुए उनका प्रयोग बताएँ। यथा $12>6$, $14<15$, $6=6$

Training Moduel=PART-I_Edited.qxd 12/16/2013 3:13 PM Page 45

स्थानीय मान

उद्देश्य

- दी हुई किसी संख्या के अंकों के स्थानीय मान की समझ विकसित करना।

सामग्री

- माचिस की तीलियों / सीकें, रबर बैंड, संख्या कार्ड।

प्रक्रिया

- सदन को दो दलों में बाँट दें।
- प्रत्येक दल को पर्याप्त मात्रा में माचिस की तिलियाँ (लगभग 80–90) दें।
- प्रतिभागियों को 10–10 तीलियों के 5–5 बंडल बनाने के लिए कहें।
- अब पूर्व से तैयार 1 से 90 तक संख्या लिखें कार्डों को हाथ में अथवा मेज (Table) पर रखें।
- श्यामपट्ट पर इकाई और दहाई तथा उनके बगल में बंडल और तीली लिख दें।
  दहाई (बंडल) इकाई (तीली)
- अब किसी एक दल से एक सदस्य को बुलाएँ तथा हाथ में रखे कार्डों में से एक कार्ड निकालने के लिए कहें, माना कि 35 लिखा कार्ड आता है। अब पूछें 35 में कितने बंडल और कितनी खुली तीलियाँ आएँगी। बंडल और तीलियाँ सबको दिखाते हुए श्यामपट्ट पर दहाई और इकाई के नीचे बंडल और तीलियों की संख्या लिखाने के लिए कहें।

  जैसे : दहाई (बंडल) = 3 इकाई (तीली) = 5

अब पूछें – यहाँ 3 दहाई का मतलब – कितनी तीलियाँ ?

- प्रतिभागी उत्तर देंगे – 30 तीलियाँ।

फिर पूछें इकाई के स्थान पर खुली हुई तिलियाँ कितनी हैं?

उत्तर मिलेगा – 5

अब निम्नांकित रूप से लिखाते हुए अंकों के स्थानीय मान स्पष्ट करें

दहाई = 3 = 10 + 10 + 10 = 30 तिलियाँ

इकाई = 5 = 5 खुली तीलियाँ

अथार्त् 35 में 5 का मतलब 5 तथा 3 का मतलब 30

- इसी प्रकार दूसरे दल से यह क्रिया कराएँ तथा किसी संख्या में स्थानीय मान की समझ विकसित करें।

जोड़ एवं घटाव

उद्देश्य

- जोड़ एवं घटाव की अवधारणा विकसित करना

सामग्री

- गोलियाँ, कंकड़, प्लास्टिक अथवा बाँस की एक छोटी नली (Pipe), कटोरा

प्रक्रिया

गतिविधि - i

- प्लास्टिक अथवा बाँस की एक छोटी नली लें जिसमें से गोलियाँ गिराया जा सकें।

I

- अगर संभव हो सके तो दो छोटे पाइपों को जोड़कर Y आकार का बना लें।

Y

- 25-30 गोलियाँ अथवा छोटे-छोटे कंकड़ लें जिन्हें नली द्वारा नीचे गिराया जा सके।
- प्रतिभागियों को गोल घेरे में बैठा दें
- बीच में मेज़ को रखकर उस पर कटोरा रख दें अथवा घेरे के बीच में फर्श पर कटोरे को रखें।
- किन्हीं दो प्रतिभागियों को बीच में बुलाएँ। स्वयं नली को हाथ से इस प्रकार पकड़े कि नली का निचला छोर कटोरी के ठीक थोड़ा ऊपर रहे ताकि नली से गिरने वाली गोलियाँ / कंकड़ कटोरी में जमा हो सके।
- एक प्रतिभागी को रखी गोलियों / कंकड़ों में से कुछ कंकड़ जैसे 5 उठाकर नली में डालने के लिए कहें। गोलियाँ / कंकड़ नली से गिरकर कटोरे में जमा होगी। पुनः दूसरे प्रतिभागी से 4 गोलियाँ गिराने के लिए कहें।
- एक तीसरे प्रतिभागी को बुलाकर कटोरे में जमा गोलियों को गिनने के लिए कहें। वह कहेगा - 9 गोलियाँ / कंकड़
- अब यह बताएँ मिलाने की यह क्रिया जोड़ कहलाती है अर्थात् 5 और 4 कंकड़ मिलकर 9 हो जाते हैं ? इसे श्यामपट्ट पर इस प्रकार लिखें - 5 कंकड़ और 4 कंकड़ मिलकर होते हैं - 9 कंकड़।

अर्थात् 5 कंकड़ + 4 कंकड़ = 9 कंकड़

यहाँ यह बताएँ कि '+' का चिह्न मिलाने अथवा जोड़ का संकेत है।

- इसी प्रकार कुछ और प्रतिभागियों से इसी तरह की क्रिया कराते हुए जोड़ की अवधारणा विकसित करें।
- पहली बार स्वयं श्यामपट्ट पर विवरण लिखें बाद में प्रतिभागियों से ही श्यामपट्ट का उपयोग कराएँ।

गतिविधि –ii

- श्यामपट्ट पर कुछ वर्ग बनाएँ यथा

- एक वर्ग को श्यामपट्ट पर एक तरफ अंकित करें तथा फिर दो अन्य वर्गों को उसके साथ मिलाएँ। यह मिलान कुछ इस प्रकार हो सकता है।

- किसी एक प्रतिभागी से श्यामपट्ट पर बनी आकृति में बनी आकृति में वर्गों को गिनने के लिए कहें।
- इसी प्रकार 4 और 5 वर्गों को मिलाकर आकृतियाँ बनवाएँ – जैसे

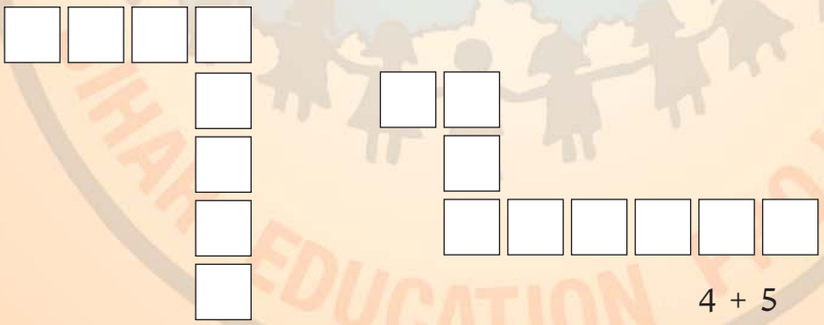

गतिविधि –iii

- चार्ट पेपर पर निम्नांकित तरीके से खाने बनाकर 1 से 9 अंकों को लिखें।

1	2	3
4	5	6
7	8	9

- प्रतिभागियों के चार समूह बना लें। प्रत्येक समूह को पर्याप्त संख्या में सीकें तथा एक-एक कंकड़ दें।
- किसी एक समूह से एक सदस्य को बुलाएँ तथा कंकड़ को चार्ट पर उछावने के लिए कहें। चार्ट पर अंकित जिस संख्या पर कंकड़ गिरे, समूह के सदस्यों से उतनी सीकें गिनकर निकालने के लिए कहें। संख्या को कॉपी पर नोट कराएँ। फिर एक सदस्य को बुलाकर पुन: कंकड़ उछालने के लिए कहें। जिस संख्या कर कंकड़ गिरे उतनी संख्या में सीकें गिनकर अलग करा लें। इस संख्या को भी कॉपी पर नोट कराएँ। अब गिनी गई सीकों को मिलाकर एक साथ गिनने के लिए कहें। बताएँ कि प्राप्त परिणाम दोनों संख्याओं का जोड़ है। इस प्रकार अन्य समूहों से भी ऐसी ही क्रिया कराएँ।
- प्रत्येक समूह से जोड़ की दो-दो क्रियाएँ कराएँ।
- जिस दल में दोनों क्रियाओं के फलस्वरूप जोड़ की संख्या ज़्यादा आएँ उसके लिए तालियाँ बजवाएँ।

घटाव की समझ

उद्देश्य

- घटाव की अवधारणा से परिचित कराना

सामग्री

- कंकड़

प्रक्रिया

- पर्याप्त मात्रा में अपने पास कंकड़ रखें।
- प्रतिभागियों में से एक प्रतिभागी को आगे बुलाएँ। कोई एक संख्या बोलकर संख्यानुसार कंकड़ गिनकर अलग रखने के लिए कहें।
- पुन: एक ऐसी संख्या बोलें जिसे पहले वाली संख्या से घटाने पर हासिल न लेना पड़े। उस संख्यानुसार कंकड़ गिनवा कर अलग कर लें।
- अब प्रतिभागी से छोटी संख्या के बराबर कंकड़ बड़ी संख्या वाले कंकड़ों में से निकालने के लिए कहें। जैसे 28 कंकड़ में से 12 कंकड़ों को निकालना।

शेष बचे कंकड़ 16

- शेष बचे कंकड़ों को गिनवाएँ।
  अर्थात् 28 कंकड़ में से 12 कंकड़ निकालने पर बचे कंकड़ = 16
  अर्थात् 28 – 12 = 16
- ऐसे ही कुछ अन्य प्रतिभागियों से भी घटाव की क्रिया कराएँ बाद में श्यामपट्ट पर कुछ प्रतिभागियों को बुलाएँ और संख्याएँ लिखाकर घटाव की क्रिया कराएँ।

गुणा एवं पहाड़ा–निर्माण की समझ

उद्देश्य

- जोड़ का संक्षिप्त रूप 'गुणा' है, की अवधारणा विकसित करना।
- गुणा करने के तरीकों से परिचित कराना।

सामग्री

- संख्या कार्ड, कंकड़, तिलियाँ

प्रक्रिया

गतिविधि -i

- पूर्व से तैयार 1 से 10 तक के संख्या कार्ड लें।
- प्रतिभागियों को पर्याप्त मात्रा में तीलियों एवं कंकड़ उपलब्ध कराएँ।
- किसी भी प्रतिभागी को बुलाएँ एवं हाथ में रखे कार्ड में से एक कार्ड निकालने के लिए कहें। माना कि संख्या 3 का कार्ड निकलता है।
- कार्ड वाली संख्या के बराबर–बराबर तीलियों को 5 जगह रखने के लिए कहें जैसे–

3 3 3 3 3

- अब 3 – 3 तीलियों को पाँचों गुच्छों को जोड़ कर परिणाम बताने के लिए कहें।
  3+3+3+3+3=15
- एक दूसरे प्रतिभागी से जोड़ की इस प्रक्रिया को श्यामपट्ट पर भी लिखवाएँ।
- यहाँ यह बताएँ हम 3 को 5 बार जोड़ने से 15 प्राप्त होता है। हम इसे ऐसे भी लिख सकते हैं। (श्यामपट्ट पर लिखें)
  3 जुटता है 5 बार = 15
  या 3, 5 बार = 15 या 3 गुणा 5 = 15 या 3 × 5 = 15
  यह बताएँ बार–बार जोड़ने के लिए '×' का निशान प्रयुक्त होता है जिसे गुणा

का चिह्न कहते हैं।

- इसी प्रकार कुछ अन्य प्रतिभागियों को बुलाकर उपर्युक्त तरीके से क्रिया कराते हुए गुणा की अवधारणा विकसित करें।

गतिविधि -ii

- पुन: एक प्रतिभागी को बुलाकर हाथ में रखे किसी कार्ड को निकलवाएँ माना कि 2 संख्या वाला कार्ड निकलता है। अब 2 की संख्या में तीलियों को निम्नांकित ढँग से सजाने के लिए कहें –

2 तीलियाँ 1 बार अर्थात् 2 × 1 = 2

2 तीलियाँ 2 बार अर्थात् 2 × 2 = 4

2 तीलियाँ 3 बार अर्थात् 2 × 3 = 6

2 तीलियाँ 4 बार अर्थात् 2 × 4 = 8

2 तीलियाँ 5 बार अर्थात् 2 × 5 = 10

2 तीलियाँ 6 बार अर्थात् 2 × 6 = 12

2 तीलियाँ 7 बार अर्थात् 2 × 7 = 14

2 तीलियाँ 8 बार अर्थात् 2 × 8 = 16

2 तीलियाँ 9 बार अर्थात् 2 × 9 = 18

2 तीलियाँ 10 बार अर्थात् 2 × 10 = 20

इसे स्वयं श्यामपट्ट पर लिखाकर पहाड़ा–निर्माण की समझ विकसित करें।

- इसी प्रकार अन्य प्रतिभागियों से भी कार्ड निकलवाते हुए उपर्युक्त ढँग से पहाड़ा निर्माण कराएँ।

गतिविधि -iii

छड़ियों द्वारा पहाड़ा–निर्माण

- कुछ छड़ियाँ लें
- 3 का पहाड़ा बनाने के लिए 3 छड़ियों को उर्ध्वाधर रखें जैसे :

3 × 1 = 3

- तीनों के ऊपर एक छड़ी रखकर इन्हें दो हिस्सों में बाँटें

3 × 2 = 6

- पुनः दो छड़ी रखकर तीन हिस्सों में बाँटे

$3 \times 3 = 9$

- इसी प्रकार हिस्से बाँटते हुए गुणन विधि से पहाड़ा-निर्माण की समझ विकसित करें।

सप्ताह के दिन

उद्देश्य

- सप्ताह के दिनों से अवगत कराना

सामग्री

- **'प्रयास'** गणित भाग-1 की पुस्तक

प्रक्रिया

- प्रतिभागियों को गोल घेरे में खड़ा करें।
- **'प्रयास'** गणित भाग-1 की पाठ्य-पुस्तक अथवा कार्य-पुस्तिका में 'सप्ताह के दिन' नामक पाठ में अंकित गीत को गाएँ तथा प्रतिभागियों को दुहराते हुए गोल घेरे में घूमते रहने के लिए कहें। यह क्रिया पूरे गीत के चार-पाँच बार दुहराने तक करें।
- प्रतिभागियों से बताएँ कि बच्चों के बीच ऐसी गतिविधि बार-बार कराने से वे सप्ताह के दिनों को तो याद कर ही लेंगे साथ ही दिनों का क्रम भी उन्हें मालूम होगा।

गीत

महीने के सहयोगी सात,
चलते रहते हैं वे साथ।
आना-जाना उनका काम,
याद करें हम उनके नाम।
पहले तीन हैं – रवि, सोम, मंगलवार,
शेष के नाम हैं – बुध, गुरु, शुक्र और शनिवार।

Training Moduel=PART-I_Edited.qxd 12/16/2013 3:15 PM Page 52

ज्यामितीय आकृतियाँ

उद्देश्य

- सरल ज्यामितीय आकृतियों की समझ बनाना।

सामग्री

- परिवेशीय वस्तुओं में ज्यामितीय आकृतियों की पहचान की समझ बनाना।

प्रक्रिया

- ज्यामितीय आकृतियों को अलग-अलग कार्ड पर अंकित कर लें अथवा श्यामपट्ट पर इन आकृतियों को अंकित कर लें। आकृतियों के सामने इनके नाम भी लिख लें।
- प्रतिभागियों से इन आकृतियों का सूक्ष्म अवलोकन करने एवं उनके नामों को ध्यान में रखने के लिए कहें।
- प्रतिभागियों को पाँच समूहों में बाँट लें।
- अब प्रत्येक समूह को सदन से बाहर जाकर आस-पास से ऐसी तीन चीज़ें ढूँढ़कर लाने तथा तीन चीज़ें देखकर आने के लिए कहें जो कार्ड / श्यामपट्ट पर अंकित आकृतियों से मिलती हों?
- प्रतिभागियों के वापस सदन में आने के बाद आकृतियों वाले कार्ड को अलग-अलग कुछ दूरी पर रख दें।
- अब बारी-बारी से प्रत्येक समूह को उनके द्वारा लाई गई वस्तुओं को संबंधित कार्ड के सामने सजाने के लिए कहें।
- इसके बाद उनके द्वारा अवलोकन की गई वस्तुओं के नाम श्यामपट्ट पर बनी आकृतियों एवं सामग्रियों के माध्यम से बच्चों को ज्यामितीय आकृतियों की समझ दे सकते हैं।
- तत्पश्चात् सदन के श्यामपट्ट पर निम्नांकित आकृति बनाकर कहें – पता करें इस आकृति में कितने वर्ग हैं?

Training Moduel=PART-I_Edited.qxd 12/16/2013 3:15 PM Page 53

सातवाँ दिन

प्रथम सत्र

पर्यावरण अध्ययन की अवधारणा एवं शिक्षण बिन्दुओं की समझ

उद्देश्य :

- पर्यावरण अध्ययन की अवधारणा एवं शिक्षण-बिन्दुओं की समझ विकसित करना।
- पर्यावरण अध्ययन की विषय-वस्तुओं के प्रति प्रतिभागियों की अभिरुचि बढ़ाना।

सामग्री :

- डस्टर, खल्ली, श्यामपट्ट

प्रक्रिया :

- सर्वप्रथम साधनसेवी प्रतिभागियों के बताएँ कि हमारे आस-पास बहुत सारी ऐसी चीज़ें बिखरी पड़ी हैं जिसके माध्यम से हम अपने पर्यावरण को समझ सकते हैं। आइए! हम इसे करके देखें।
- अब सभी प्रतिभागियों को प्रशिक्षण कक्ष से 10 मिनट के लिए बाहर जाकर परिवेश भ्रमण करने को कहें तथा निर्देश दें कि इस दौरान उन्हें जो चीज़ें अच्छी लगें, उन्हें प्रशिक्षण-कक्ष में ले आएँ।
- प्रतिभागियों द्वारा लायी गयी चीज़ें यथा माचिस की डिब्बिया के कवर, काग़ज़ के टुकड़े, टायर के टुकड़े, टूटे हुए कलम, पत्तियाँ, फूल, पत्थर के टुकड़े, शीशे के टुकड़े, बोतल के ढक्कन, टूटी बोतल में पानी आदि को सदन के बीच में रख दें।
- अब प्रतिभागियों को दो समूहों में विभक्त कर आमने-सामने बैठा दें। आगे एक समूह के किसी प्रतिभागी को प्रशिक्षण के बीच में रखी किसी चीज़ में से किसी एक का नाम पर्ची में लिखाकर देने को कहें तथा दूसरे समूह को कम-से-कम प्रश्न करके उस चीज़ का नाम पता करने का कहें।

संभावित प्रश्न-उत्तर निम्नवत् हो सकते हैं :-

❖ क्या यह लकड़ी की बनी है?
नहीं

- ❖ क्या यह काँच की बनी है ?
  नहीं
- ❖ क्या यह प्लास्टिक की बनी है ?
  हाँ
- ❖ क्या इसका रंग लाल है ?
  नहीं
- ❖ क्या यह लिखने के काम आती है ?
  हाँ
- ❖ क्या यह कलम है ?
  हाँ

◆ आगे साधनसेवी क्रमानुसार प्रश्न एवं उत्तर देनेवाले समूहों को बदल दें। अर्थात् जो दल प्रश्न पूछ रहा था उसे उत्तर देने के लिए कहें और जो दल उत्तर दे रहा था उसे प्रश्न पूछने के लिए कहें। इस खेल को प्रतिस्पर्धात्मक स्वरूप देने के लिए सही उत्तर के लिए +1 अंक एवं ग़लत उत्तर के लिए –1 अंक दें।

[**नोट :- इस खेल को संग्रहीत वस्तुओं को कमरे के चार कोनों में एक-एक झोले या कूट के बक्से में रखकर तथा क्रम से एक-एक वस्तु प्रतिभागियों से छिपाते हुए साधनसेवी अपने हाथ से निकाल कर भी करा सकते हैं।**]

◆ खेल पूरा होने के उपरान्त साधन सेवी प्रतिभागियों से प्रश्न करेंगे :-

प्रश्न : यह खेल कैसा लगा ?
संभावित उत्तर : अच्छा
प्रश्न : इस खेल के माध्यम से आपने क्या सीखा ?
संभावित उत्तर : आस-पास की प्रकृति में उपलब्ध विभिन्न वस्तुओं की विशेषताएँ या गुणों की जानकारी हुई।
प्रश्न : इस गतिविधि के दौरान आपका कौन-सा अंग सबसे ज्यादा सक्रिय था ?
संभावित उत्तर : दिमाग़
प्रश्न : आपके दिमाग़ में कौन-सी हलचल या संक्रिया चल रही थी ?
संभावित उत्तर : जिज्ञासा, वस्तुओं के गुण के बारे में चिन्तन, तुलना, कल्पना, वर्गीकरण आदि।

◆ अब साधन सेवी निष्कर्ष के रूप में निम्न बातें समझाते हुए स्पष्ट करें :-

- ❖ पर्यावरण अध्ययन के दौरान हमें तीन चीज़ों पर ध्यान देना होगा :- (1) आस-पास की प्रकृति, (2) समाज, (3) बच्चा, आस-पास की प्रकृति के अन्तर्गत - पेड़ -पौधे, आग आकाश आदि आते हैं। इसी तरह समाज में माता-पिता मित्र, बुढ़े-बुजूर्ग आदि। बच्चों की भी अपनी एक दुनिया, शक्ति एवं सोच है जिसमें उनका मन रमा रहता है। वह एक नन्हें पौधा की तरह है जो अपने परिवेश से प्रेरणा लेकर विकसित हो रहे हैं। अत: बच्चों से संबंधित चीजें / बातें आदि हमारे पर्यावरण-अध्ययन के थीम एवं प्रकरण होंगे।
- ❖ बच्चा निरंतर अपने आस-पास की दुनिया देखने एवं समझने की कोशिश करता है। देखने, सूँघने, चखने, छूने व सुनने के संदेश निरंतर हमारी इन्द्रियों के माध्यम से हमारे दिमाग़ में पहुँचते हैं। दिमाग़ इस प्रकार एकत्रित असंख्य जानकारियों को सजाता है, जिसे बच्चे ने प्रकृति एवं समाज से जूझते हुए प्राप्त किया है। बच्चा यह कार्य खुशी-खुशी अपनी जिज्ञासा की तृप्ति हेतु करता है। इस तरह वह अपनी ज्ञान की संरचना स्वयं करता है।
- ❖ अत: हमें पर्यावरण अध्ययन के दौरान बच्चों को सीखने-सिखाने के लिए उन्हीं प्रक्रियाओं का सहारा लेना चाहिए जो ऊपर की गयी गतिविधियों के दौरान हमने स्वयं महसूस की हैं। अत: जब बच्चा कक्षा/केन्द्र में होता है तो उसकी रुचि को उभारने के लिए या आनन्ददायी माहौल निर्मित करने के लिए हमें भ्रमण, खेल, गीत-संगीत, कथा-कहानी आदि गतिविधियों का उपयोग करना चाहिए।
- ❖ अब साधनसेवी प्रतिभागियों को उनके द्वारा की गयी गतिविधि एवं चर्चा के आधार पर पूछें- पर्यावरण अध्ययन हम कैसे करें?
- ❖ अन्त में साधनसेवी प्रतिभागियों द्वारा बतायी गयी विधियों, प्रक्रियाओं / कौशलों का समेकन करें।

संभावित उत्तर :

- अवलोकन द्वारा
- जिज्ञासा उत्पन्न कर
- वर्गीकरण के माध्यम से
- सूची निर्मित कर
- तुलना द्वारा
- चर्चा एवं विश्लेषण द्वारा
- कार्य-कारण संबंध स्थापित कर निष्कर्ष निकाल कर आदि।

Training Moduel=PART-I_Edited.qxd 12/16/2013 3:16 PM Page 56

द्वितीय सत्र

पर्यावरण अध्ययन के अन्तर्गत शिक्षण बिन्दुओं की जानकारी

उद्देश्य :

- पर्यावरण अध्ययन के विषय-वस्तुओं / प्रकरणों की जानकारी।
- प्रकरणों के माध्यम से पाठ प्रस्तुति की क्षमता का विकास।

सामग्री : चार्ट पेपर, स्केचपेन, चित्र, चार्ट निर्मित करने की सामग्रियाँ आदि।

- साधान सेवी प्रतिभागियों से प्रश्न करें :
  - ❖ आपके आस-पास बच्चों के सीखाने-सिखाने के कौन-कौन से प्रकरण (थीम) हो सकते हैं?
  - ❖ पुन: निर्देश दें कि वे अपनी कॉपी में 5 मिनट के दौरान इसे लिखें।
- अब साधानसेवी सभी प्रतिभागियों द्वारा चयनित प्रकरणों की एक सूची श्यामपट्ट पर पूछ-ताछ के माध्यम से अंकित करें और बताएँ ये सभी प्रकरण ही एक तरह से हमारे पर्यावरण अध्ययन के पाठ्यक्रम हैं जिसके बारे में हमें बच्चों को जानकारी देनी है।
- अब साधानसेवी प्रतिभागियों को चार समूहों में विभक्त कर उन्हें एक-एक प्रकरण पर पाठ-प्रस्तुति हेतु तैयारी करने को कहें। संभावित प्रकरण निम्नवत् हो सकते हैं:-

  (i) हमारा शरीर (ii) सजीव-निर्जीव

  (iii) हमारा परिवार (iv) जल

  (v) हमारा भोजन (vi) पर्व-त्योहार आदि।
- पुन: निर्देश दें कि पाठ-प्रस्तुति एक निश्चित योजना, TLM, गतिविधि के माध्यम से किया जाएगा तथा इससे सम्बन्धित प्रश्न भी सभी समूह निर्मित करें। पाठ की प्रस्तुति हेतु समूह के किसी भी प्रतिभागी को बुलाया जा सकता है। अत: सभी तैयार रहेंगे। यह भी निर्देश दें कि प्रतिभागी संबंधित पाठ-प्रस्तुति की तैयारी हेतु भाषा की पाठ्य-पुस्तक (प्रयास भाग-1) से सहायता प्राप्त कर सकते हैं।

तृतीय सत्र

पर्यावरण अध्ययन के शिक्षण की

Training Moduel=PART-I_Edited.qxd 12/16/2013 3:16 PM Page 57

क्षमता का विकास

उद्देश्य :

- प्रकरण आधारित पर्यावरण अध्ययन की पाठ–प्रस्तुति की क्षमता का विकास।

प्रक्रिया :

- प्रत्येक समूह की प्रस्तुति के लिए क्रमश: एक–एक प्रतिभागी को बुलाएँ एवं इन्हें पाठ की प्रस्तुति एवं इससे संबंधित सुझावों हेतु 15 मिनट का समय आवंटित करें।
- प्रतिभागियों को निर्देश दें कि प्रस्तुति के समय में प्रतिभागी श्यामपट्ट, खल्ली या अपने खुद के द्वारा निर्मित TLM तथा मूल्यांकन के प्रश्नों का उपयोग करें तथा अपनी–अपनी पाठ–योजना प्रस्तुत करें।
- प्रत्येक प्रस्तुति के बाद सदन में उस पर चर्चा कराएँ और यथावश्यक प्रतिभागियों के सुझाव के साथ–साथ अपनी ओर से बातें जोड़ते हुए चर्चा को पूर्णता प्रदान करें।

चतुर्थ सत्र

पर्यावरण अध्ययन के दौरान स्वास्थ्य एवं सफाई

उद्देश्य :

- पर्यावरण अध्ययन के दौरान स्वास्थ्य एवं सफाई के शिक्षण बिन्दुओं की समझ विकसित करना।

सामग्री : खल्ली, डस्टर, श्यामपट्ट, चार्ट पेपर, स्केच पेन।

- साधनसेवी सभी प्रतिभागियों को खड़ा कराएँ तथा बच्चों के स्वास्थ्य एवं सफाई से संबंधित एक गीत सामूहिक रूप से हाव–भाव के साथ गवाएँ।

संभावित गीत–

ठंढा भोजन करें नहीं बासी नापसंद वही है अक्लमंद
बासी करें नापसंद वही है अक्लमंद–2
हाथ धोकर खाना खाएँ, साफ रखें नाखून
शौच से आकर हाथ धोएँ यूज करें साबुन
रोज़–रोज़ नहाना बाबू है फायदेमंद।
वही है अक्लमंद। बासी करे नापसंद .....।
आँखा, नाक, कान, बाल, अगर तेरा साफ है

Training Moduel=PART-I_Edited.qxd 12/16/2013 3:16 PM Page 58

जोड़-घटाव की एक ग़लती बाबू तेरी माफ है
साफ आँगन-घर तो हवा बहे शीतलमंद
वही है अक्लमंद .....।
बासी करें नापसंद, वही है अक्लमंद।
नाली महके कूड़ा सड़े, घर रहे गंदा
हर तरफ बीमारी चले डॉक्टरी का धंधा
मेहनत की कमाई खर्च हुए लंद-फंद
फिर कैसे अक्लमंद?
बासी करें नापसंद वही है अक्लमंद
ठंढा भोजन करें नहीं ... ।

- अब साधनसेवी पूछ-ताछ एवं चर्चा के माध्यम से हाथ, आँख, नाक, मुँह, दाँत, बाल आदि अंगों की सफाई के महत्त्व एवं तरीकों पर चर्चा करें। तदुपरान्त प्रतिदिन स्नान के तरीके एवं महत्त्व पर चर्चा करें।
- अब साधनसेवी प्रतिभागियों को पाँच समूहों में विभक्त करें तथा उन्हें स्वास्थ्य एवं सफाई से संबंधित एक-एक विषय आवंटित करें तथा दिये गये विषय पर समूह में चर्चा कर प्रस्तुत करने का निर्देश दें।
  - ❖ स्वास्थ्य संबंधी अच्छी आदतों की सूची बनाएँ।
  - ❖ घर-द्वार की सफाई क्यों और कैसे करेंगे?
  - ❖ अपने केन्द्र की सफाई क्यों और कैसे करेंगे?
  - ❖ अपने गाँव/टोले की सफाई क्यों और कैसे करेंगे?
  - ❖ प्राथमिक उपचार हेतु आवश्यक उपकरणों एवं सामग्रियों की सूची बनाएँ।
- क्रमवार दलों की प्रस्तुति कराएँ।
- अन्त में उभरे बिन्दुओं के आधार पर निष्कर्ष के रूप में सार-संक्षेप प्रस्तुत करें।

आठवां दिन

प्रथम सत्र

उद्देश्य

- अंग्रेजी विषय की समझ विकसित करना।

सामग्री : खल्ली, डस्टर, श्यामपट्ट, चार्ट पेपर, स्केच पेन।

Training Moduel=PART-I_Edited.qxd 12/16/2013 3:16 PM Page 59

प्रक्रिया

- सर्वप्रथम साधनसेवी अंग्रेजी की Poem का वाचन करेंगे। प्रतिभागी साधनसेवी के पीछे–पीछे इस कविता का वाचन करेंगे।

Rat & Cat

Five rat,
Very fat.
Saw a cat,
with, bat and hat.
Little rats,
hid in a mat.
And they gave,
A chick-chick call
Lovely doll.
Brought a ball,
She was very big and tall.
threw the ball,
with a fun
Cat Scored
Zero run.

इस क्रिया को दो बार करने के बाद साधन सेवी प्रतिभागियों में से किसी एक को बुलाकर उनसे पूछेंगे –

- आपने अभी जो कविता वाचन किया उसके कुछ शब्द हमें बताएँ।
- यह काम बारी–बारी से अन्य प्रतिभागियों के साथ करेंगे।

प्रतिभागियों के द्वारा बताए गये शब्दों को साधनसेवी श्यामपट पर लिखते जायेंगे।

- अब साधनसेवी इन शब्दों के Rhyming Word प्रतिभागियों को बतायेंगे। इस काम में प्रतिभागियों से भी मदद ली जाएगी। जैसे CAT-RAT-FAT. Hall-Ball-Doll.
- अब साधनसेवी इन शब्दों का उच्चारण कर प्रतिभागियों (विद्यार्थियों) को अक्षर ज्ञान करायेंगे। C-A-T, R-A-T, H-A-L-L.
- प्रतिभागियों को (विद्यार्थियों) बतायेंगे कि अंग्रेजी–वर्णमाला में कुल 26 अक्षर हैं - A, B, C, ...X, Y, Z.
- साधनसेवी इन अक्षरों का उच्चारण बारी–बारी से करेंगे। प्रतिभागी उनका अनुसरण

करेंगे।

- अंग्रेजी वर्णमाला के अक्षरों को Vowel और Consonant दो श्रेणियों में बाँटा गया है –

  Vowel - a, e, i, o, u (5 अक्षर)

  Consonant - b, c, d, ...(21 अक्षर)

द्वितीय सत्र

गतिविधि

- प्रतिभागियों को एक–एक कार्ड देंगे, जिसपर वर्ण लिखा रहेगा। फिर उन्हें समूह में शब्द बनाने को कहा जाएगा। अब बारी–बारी से साधनसेवी अंग्रेजी वर्णमाला के अक्षर बोलेंगे। Ball, Bat, Wicket, Master, Phone, Mobile, Doctor, Nurse, Time-Table, Train, Road, TV, Radio, Building, Hospital, Accident, Sweater, Chain, Chair, Cinema, Paper, Plane, Rail, Coolie.
- जिस प्रतिभागी या समूह ने उस वर्णमाला से शुरूकर जितने शब्द बनायें हैं उसे तेज आवाज में बोलकर पूरे सदन को सुनायेंगे। साधनसेवी उन शब्दों को पुनः बोलेंगे और सभी प्रतिभागी उसे दुहरायेंगे।
- साधनसेवी प्रतिभागियों को अंग्रेजी वर्णमाला के अक्षरों को लिखने का तरीका बताएँगे। English Alphabet :-

  Capital Letter - A, B, C, D, E, F, G, H, I, J, K, L, M, N, O, P, Q, R, S, T, U, V, W, X, Y, Z.

  Small Letter - a, b, c, d, e, f, g, h, i, j, k, l, m, n, o, p, q, r, s, t, u, v, w, x, y, z.

तीसरा एवं चौथा सत्र

- प्रतिभागियों को प्रयास English Book, Work Book & Writing Book की प्रति उपलब्ध कराकर लिखाने के तरीके से परिचित करायेंगे।

  पुनः प्रतिभागियों को 8 समूहों में बाँटकर उन्हें Prayas English Part-1 की पुस्तक देकर निम्नवत अध्ययन को दिया जाए –

Training Moduel=PART-I_Edited.qxd 12/16/2013 3:17 PM Page 61

Group 1 - Lesson 1, 2
Group 2 - Lesson 3, 4
Group 3 - Lesson 9
Group 4 - Lesson 5, 8
Group 5 - Lesson 6, 7
Group 6 - Lesson 10, 11
Group 7 - Lesson 12
Group 8 - Lesson 13

नौवाँ दिन

प्रथम सत्र

Base Line Test

उद्देश्य

- बच्चों की बौद्धिक स्तर की जानकारी।
- बच्चों की प्रगति के लिए योजना निर्माण।
- दक्षतानुसार समूह निर्माण करना।

सामग्री

- चार्ट पेपर, स्केच पेन, श्यामपट्ट, खल्ली, डस्टर जाँच पत्रक का प्रारूप।

प्रक्रिया

साधनसेवी सभी प्रतिभागियों को जाँच-पत्रक का प्रारूप एक-एक प्रति वितरित कर दें।

- जाँच पत्रक के अध्ययन एवं चिंतन के लिए प्रतिभागियों को 10 मिनट का समय दें।
- तत्पश्चात गहन चर्चा कर यह आश्वस्त हो लें कि प्रतिभगियों को जाँच-पत्रक की अवधारणा स्पष्ट हो गयी है।
- जाँच-पत्रक दो विषय (भाषा और गणित) के होंगे।
- जाँच-पत्रक के आधार पर भाषा में तीन समूह का निर्माण होगा।

  (क) अक्षर

  (ख) शब्द

(ग) कहानी (समझकर पढ़ना)

- गणित में तीन समूह का निर्माण होगा।
  (क) 1–100 तक संख्यांक।
  (ख) हासिल का जोड़–घटाव।
  (ग) हासिल का जोड़–घटाव एवं गुणा–भाग।
- दक्षता के आधार पर बच्चों का समूह बनाने के लिए यह आवश्यक होगा कि केनद्र के सभी बच्चे को भाषा एवं गणित में उक्त जाँच पत्रक के अनुसार शैक्षिक स्तर की जानकारी प्राप्त कर लेंगे।
  – समूहवार दक्षता का विकास स्वयं सेवक करेंगे।
  – सतत् व्यापक मूल्यांकन के लिए बेस लाइन कर उपलब्धि का संधारण आवश्यक है।

Base Line Test करने की प्रक्रिया

स्वयंसेवक बच्चों का Base Line Test के लिए जाँच पत्रक का उपयोग विषय–वार अलग–अलग करेंगे। सर्वप्रथम भाषा (हिन्दी) के Base Line के लिए निर्धारित प्रपत्र में अंकित कहानी/अनुच्छेद को एक–एक कर बच्चों को बुलाकर पढ़वायेंगे। बच्चे पढ़ लेंगे तो उसे कहानी समूह में नामित करेंगे, यदि वह कहानी नहीं पढ़ पाया तो उसे शब्द को पढ़वाकर देखें। यदि शब्द पढ़ लेता है तो वह शब्द समूह में नामित होगा, नहीं पढ़ने पर उससे अक्षर की पहचान करायें और वह अक्षर समूह का बच्चा होगा। यानी केन्द्र से सभी बच्चों को भाषा में तीन समूह में रजिस्टर पर नामित करे लें। वह इस प्रकार हो सकता है –

अक्षर समूह	शब्द समूह	कहानी समूह
1.	1.	1.
2.	2.	2.
3.	3.	3.
4.	4.	4.

- इसी प्रकार गणित विषय में भी जाँच पत्रक के आधार पर समूह निर्माण करेंगे। जो इस प्रकार होगा –

1–100 तक संख्यांक की पहचान	बिना हासिल का जोड़–घटनाव	हासिल का जोड़–घटाव एवं गुणा–भाग

Training Moduel=PART-I_Edited.qxd 12/16/2013 3:17 PM Page 63

1.	1.	1.
2.	2.	2.
3.	3.	3.
4.	4.	4.

- प्रत्येक 15 दिन पर बच्चों की दक्षता का जाँच करते रहेंगे। तथा शैक्षिक स्तर के अनुरूप उनका नाम समूह में बदला जाएगा।
- कोशिश होगी कि अंतिम समय तक सभी बच्चे निर्धारित उच्चतम दक्षता को प्राप्त कर लें ताकि उनको मुख्य धारा से जोड़ा जा सके।

जाँच पत्र का नमूना

भाषा (हिन्दी)

कहानी

मैं नानी के घर आया हूँ। मेरे नाना-नानी गाँव में रहते हैं। मुझे उनका गाँव बहुत अच्छा लगता है। यहाँ चारों ओर हरे-भरे खेत हैं। खेतों में कहीं गेहूँ के पौधे लगे हैं तो कहीं सरसों के। देखकर मन खुश हो जाता है।

अनुच्छेद

मैं छोटा लड़का हूँ। मेरा भाई भी छोटा है। मेरी माँ मोटी है। बाबा बड़े हैं। सुरेश छोटा है।

शब्द

कम	नल	चल	बल	लाल	बाल	भाल	दाल	पेट	जेट	मेर
देर	तिल	झील	नील	फीर	साड़ी	चोर	पैर	भेड़	उसका	पहले

उनसे

अक्षर

क	ग	स	प	ब	द	ध	म	ल	फ	ख	ट
ठ	च	ज	र	ह	स	ग	त	न	फ	भ	छ

गणित

संख्यांक :

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10

Training Moduel=PART-I_Edited.qxd 12/16/2013 3:17 PM Page 64

11	12	13	14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27	28	29	30
31	32	33	34	35	36	37	38	39	40
41	42	43	44	45	46	47	48	49	50
51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
61	62	63	64	65	66	67	68	69	70
71	72	73	74	75	76	77	78	79	80
81	82	83	84	85	86	87	88	89	90
91	92	93	94	95	96	97	98	99	100

जोड़ :

7	9	20	15	18	22	45
+ 5	+ 6	+ 30	+ 10	+ 12	+ 49	+ 56
------	------	------	------	------	------	------
------	------	------	------	------	------	------

घटाव :

9	8	23	46	55	77	75
- 3	- 5	- 12	- 32	- 21	- 28	- 28
------	------	------	------	------	------	------
------	------	------	------	------	------	------

गुणा :

4	5	12	25	35	145	26
x 3	x 6	x 3	x 5	x 8	x 7	x 18
------	------	------	------	------	------	------
------	------	------	------	------	------	------

भाग

8 ÷ 2	------	9 ÷ 3	------	16 ÷ 4	------
35 ÷ 5	------	86 ÷ 2	------	95 ÷ 5	------
125 ÷ 5	------	156 ÷ 5	------	239 ÷ 2	------

Training Moduel=PART-I_Edited.qxd 12/16/2013 3:18 PM Page 65

द्वितीय सत्र

जीवन-वृत (Child Profile)

उद्देश्य

- बच्चों की व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक स्थिति को जानना।

सामग्री

- चार्ट पेपर, स्केच पेन, श्यामपट्ट, खल्ली, डस्टर।

प्रक्रिया

साधनसेवी Child Profile के मुख्य विन्दुओं पर चर्चा करें।

- साधनसेवी सभी प्रतिभागियों को 5 समूहों में बाँट दें।
- तत्पश्चात निर्देश दे कि सभी समूह Child Profile का प्रारूप तैयार करें। इसकी तैयारी के लिए 20 मिनट का समय दें।
- सभी दलों के प्रस्तुति के बाद समेकन करते हुए मानक प्रारूप को प्रदर्शित करें।
- अंत में प्रतिभागियों को स्पष्ट करें कि बच्चों की पृष्ठभूमि को जानने/समझने के लिए Child Profile तैयार करना आवश्यक है।
- Child Profile से निम्नलिखित जानकारियाँ प्राप्त हो सकती है :-
  - बच्चों की शारीरिक, बौद्धिक स्थिति।
  - पारिवारिक
  - सामाजिक
  - आर्थिक
  - आदत एवं रूचि
  - स्वास्थ्य से संबंधित जानकारी
- अंत में साधनसेवी स्पष्ट कर दें कि सतत व्यापक मूल्यांकन (CLE) के लिए Child Profile तैयार करना आवश्यक है।

Child Profile

1. बालक/बालिका का नाम :
2. पिता का नाम :

Training Moduel=PART-I_Edited.qxd 12/16/2013 3:18 PM Page 66

3. माता का नाम :
4. अभिभावक का नाम (यदि माता-पिता नहीं हों तो) :
5. जन्म तिथि :
6. कोटि :
7. ऊँचाई :
8. वजन :
10. पता :
11. शैक्षिक स्थिति-
    (क) छीजित - (किस कक्षा में छीजित हुआ है) :
    (ख) अनामांकित -
    (ग) छीजन का कारण -
12. परिवार की शैक्षिक स्थिति-
    पिता :
    माता :
    भाई :
    बहन :
    अन्य :
13. परिवार का व्यवसाय-
    कृषि :
    मजदूरी :
    व्यापारिक या अन्य पैतृक व्यवसाय :
    अन्य :
14. रूचि :
15. अन्य (कुछ हो तो)

शिक्षा स्वयं सेवक का हस्ताक्ष्र

Training Moduel=PART-I_Edited.qxd 12/16/2013 3:18 PM Page 67

दसवाँ दिन

प्रथम सत्र

चेतना सत्र – प्रार्थना/अभियान गीत/प्रतिवेदन/डायरी–वाचन

कला शिक्षण एवं सृजनशीलता

उद्देश्य

- कला शिक्षा के महत्व को समझना।
- विभिन्न विषयों में कला शिक्षा का उपयोग।

सामग्री

- चार्ट पेपर, स्केच पेन, फ्लैश कार्ड, श्यामपट्ट, खल्ली, डस्टर आदि।

प्रक्रिया

साधनसेवी कला शिक्षा पर बड़े समूह में चर्चा करेंगे। चर्चा के पश्चात् सभी प्रतिभागियों को पाँच समूह में विभक्त कर दें। अब सभी समूह को पहले से तैयार प्रश्न का फ्लैश कार्ड उपलब्ध करायें। प्रश्न इस प्रकार के हो सकते हैं।

- दस चित्र का फ्लैश कार्ड।
- दो कविता का निर्माण एवं गायन।
- एक नाटक की तैयारी एवं प्रस्तुति।
- हाव–भाव के साथ कोई गीत की प्रस्तुति (लोकगीत, लोकनृत्य)
- अभिनय करें – ठहाका लगाने का, पशु–पक्षी के बोली, पेपर बेचने का आदि।

निर्देश

उक्त तैयारी के लिए 30 मिनट का समय दें। तैयारी के बाद सभी दल का बारी–बारी से प्रस्तुति करायें। अंत में साधनसेवी समेकित कर निष्कर्ष के रूप में कला की महत्व को स्पष्ट करें। परिशिष्ट देंखो –

परिशिष्ट

अपनी व्यक्तिगत भावनाओं के प्रकटीकरण हेतु मनुष्य द्वारा विकसित अभिव्यक्ति के विभिन्न सौन्दर्ययुक्त एवं सुरूचिपूर्ण माध्यमों को 'कला' कहते हैं। कला मनुष्य की कल्पनाशीलता एवं रचनात्मकता के सहारे अभिव्यक्त होनेवाला एक ऐसा माध्यम है जिसकी प्रभावशीलता एवं संप्रेषण, देश, काल, स्थान भाषा की सीमा से परे हैं। कभी यह अभिव्यक्ति

गीत बन जाती है तो कभी संगीत, कभी चित्रों के द्वारा, कभी मूर्तियाँ, कभी भावनाएँ तो कभी मूक रूप से प्रकट होती हैं।

विभिन्न कलाओं का उपयोग शिक्षण विधि के रूप में नि:संदेह विभिन्न विषयों को जानने समझने या विभिन्न विषयगत अवधारणाओं से बच्चों को परिचित कराने के लिए विभन्न कलाओं के माध्यम से शिक्षण विधि अपनाना उपयोगी होगा। कला के अन्तर्गत निम्न बातें आ सकती हैं – ललित कला, चित्र, पोस्टर, मूर्तिकला, कार्टून, कोलाज, प्रदर्शन कला – नाटक, नृत्य, कठपुतली, कविता, अभिनय आदि।

द्वितीय सत्र

चेतना सत्र – प्रार्थना/अभियान गीत/प्रतिवेदन/डायरी–वाचन

TLM निर्माण

उद्देश्य

- TLM निर्माण, संकलन एवं उपयोग का कौशल विकसित करना।

सामग्री

- चार्ट पेपर, स्केच पेन, सादा कागज, कैंची, गोंद, पेपर पिन, रंगीन कागज, धागा, थर्मोकोल, मानचित्र, पुराना अखबार आदि।

प्रक्रिया

- साधनसेवी सभी प्रतिभागियों को 6 समूहों में बाँट दें।
- प्रत्येक समूह को संबंधित विषय की पाठ्य पुस्तक उपलब्ध करा दें। यथा –

  दल संख्या 1 एवं 3 को भाषा (हिन्दी)।
  2 एवं 4 को गणित।
  5 को अंग्रेजी।
  6 को हिन्दी पाठ्य–पुस्तक के आधार पर ही पर्यावरण अध्ययन से संबंधित।
- उक्त सभी दलों को अपने–अपने विषय एवं पाठ के अनुसार TLM बनाने का निर्देश दें।
- प्रयास करें कि परिवेश में उपलब्ध वस्तुओं का अधिक–से अधिक उपयोग TLM बनाने में हो।
- TLM की तैयारी के लिए 1 घंटे का समय निर्धारित करें।

Training Moduel=PART-I_Edited.qxd 12/16/2013 3:19 PM Page 69

- साधनसेवी सभी दलों का अनुश्रवण करते रहेंगे और आवश्यकतानुसार सहयोग भी करेंगे।
- अगले दिन प्रत्येक दल से बारी-बारी से प्रस्तुति कराएँ।
- प्रतिभागियों में TLM निर्माण एवं उपयोग की समझ विकसित होगी।

तृतीय सत्र एवं चतुर्थ सत्र

टी.एल.एम. की प्रस्तुति समापन एवं समापन

प्राप्त उत्तर को स्पष्ट करते हुए साधनसेवी सदन में स्पष्ट करेंगे कि वह सामग्री जो किसी पाठ को समझने-समझाने में मदद करती है T.L.M. कहलाती है। अर्थात् वह वस्तु जिसकी मदद से पाठ बढ़ाने में आसानी हो T.L.M. कहलाता है। यह सामग्री घरों में, बाज़ारों में आसानी से उपलब्ध होती है। ऐसे सामग्रियों का निर्माण भी आसानी से बिना कुछ व्यय किए कबाड़ से जुगाड़ करके किया जा सकता है।

अब साधनसेवी कमरे में उपलब्ध किसी भी वस्तु को T.L.M. के रूप में इस्तेमाल कर किसी भी विषय-वस्तु को स्पष्ट करते हुए उदाहरण पेश करेंगे और ऐसा प्रतिभागियों से भी करके दिखाने को कहेंगे। साधनसेवी यह भी स्पष्ट करेंगे कि किसी एक T.L.M. का अलग-अलग विषय-वस्तु में भी इस्तेमाल होता है।

अब साधनसेवी प्रतिभागियों को तीन समूहों में बाँट देंगे। तीनों समूहों को भाषा और गणित की पुस्तक उपलब्ध कराकर एक को भाषा की, दूसरे को गणित की और तीसरे को भाषा की पुस्तक से ही पर्यावरण (आस-पास के परिवेश से जुड़ी वस्तुएँ) अध्ययन कराने में मदद करने वाली सामग्रियों का निर्माण (कम-से-कम 5-5 प्रति समूह) का निर्देश देंगे। सभी समूह को सामग्री उपलब्ध कराएँगे और उन्हें 30-40 मिनट का समय देंगे।

T.L.M. निर्माण के उपरान्त प्रतिभागियों द्वारा बनाए गए T.L.M. की मदद से किसी पाठ को पढ़ाने का निर्देश देंगे। समूहवार इसकी प्रस्तुति करायी जाएगी।

इससे प्रतिभागियों में T.L.M. निर्माण, उपयोग की समझ विकसित होगी।

समापन

प्रशिक्षणचर्या के संबंध में सभी प्रतिभागियों से मंतव्य प्राप्त करें तत्पश्चात अभियान गीत के साथ सत्र का समापन करें।

Training Moduel=PART-I_Edited.qxd 12/16/2013 3:19 PM Page 70

शिक्षा में समुदाय की भागीदारी

एक स्पष्ट संदेश के साथ एक लोकप्रिय कहावत है कि एक बच्चे को बढ़ाने में एक पूरा गाँव लगता है। बच्चों के वृद्धि और विकास में पुरे समुदाय की अनिवार्य भूमिका होती है। माता-पिता और परिवार के सदस्यों का उनकी शिक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका है, साथ ही सभी छात्रों के लिए उच्च गुणवत्ता की शिक्षा को आश्वस्त करने की जिम्मेदारी व्यापक समुदाय की भी है। प्राचीनकाल में, अभिभावक मुख्यत: माता की भागीदारी छात्रों को सहायता करने में होती थी। लेकिन आज पुराने मॉडल को हटाकर अधिक समग्र दृष्टिकोण के साथ नए संरचना प्रतिस्थापित किया गया है, जिसमे स्कूल-परिवार-सामुदायिक अब मां और पिता, सौतेली माता-पिता, दादा-दादी, पालक माता पिता, अन्य रिश्तेदारों और अभिभावक, इत्यादि सभी छात्र उपलब्धि और स्कूल सफलता से जुड़े हुए है। शिक्षा के क्षेत्र में माता-पिता, परिवार, और सामुदायिक भागीदारी उच्च शैक्षणिक प्रदर्शन और स्कूल सुधार के साथ संबद्ध करता है। स्कूल, माता-पिता, परिवारों और समुदाय शिक्षा क्षेत्र में छात्रों को उच्च ग्रेड कमाने में, अधिक नियमित रूप से स्कूल में भाग लेने, लंबे समय तक स्कूल में रहने में, इत्यादि के लिए एक साथ काम करते हैं।

बच्चे की पहली शिक्षा उसके परिवार से आती है, वो पहली भाषा अपने परिवार से सीखता है, स्कूल उसे एक मार्गदर्शन देता है. चुकि स्कूल में अलग अलग परिवार से लोग आते है इसलिए बच्चे दुसरो के साथ तालमेल बिठाते हुए अपना विकास करता है और समाज के प्रति अपनी सोच को विकसित भी करता है. शिक्षा स्कूलों में ही नहीं बल्कि परिवारों, समुदायों और समाज के भीतर भी स्थापित है। बिना सामाजिक प्रयास के एक बच्चा अपने भीतर के गुणों का सही ढंग से प्रदर्सन नहीं कर सकता है उसे समाज के भीतर ही रहकर अपने कार्य करने है. इस संदर्भ में अगर समाज की भूमिका देखी जाये तो ये बहुत ही महत्वपूर्ण है। जैसे कॉल्लेत्ता और पर्किन्स (1995) समुदाय की भागीदारी के विभिन्न रूपों को वर्णन निम्न प्रकार से किया है।

(क) अनुसंधान और डेटा संग्रह
(ख) संवाद,
(ग) स्कूल प्रबंधान,
(घ) पाठ्यक्रम डिजाइन,

(ड) अधिगम सामग्री का विकास, और

(च) स्कूल निर्माण

हेन्वेल्ड और क्रेग (1996) ने स्कूल प्रभावशीलता निर्धारित करने के लिए महत्वपूर्ण कारकों में से एक के रूप में माता पिता और समुदाय के समर्थन को मान्यता दी है, वे इसे निम्न श्रेणियों में बाँट कर देखते है :-

1. समुदाय स्कूल के लिए वित्तीय और भौतिक सहायता प्रदान करता है
2. बच्चों को सीखने के लिए तैयार करता है
3. समुदाय स्कूल प्रशासन में एक सार्थक भूमिका निभाता है,

शिक्षा के क्षेत्र में समुदाय की भागीदारी क्या कर सकते हैं ?

शिक्षा के क्षेत्र में किसी भी प्रकार के गतिविधि के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए समुदाय और परिवार / माता-पिता को सम्मिलित करना अत्यंत ही आवश्यक है, क्योंकि इससे बच्चो को बेहतर सिखाने में सहायता प्राप्त होती है एवं साथ ही साथ वो बदलती दुनिया के लिए भी तैयार होते है। सामुदायिक भागीदारी इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए योगदान देता है, एवं निम्न कार्यो में इसकी झलक दिखती है.

- सीमित संसाधनों का अधिकतम उपयोग करने में
- पाठ्यक्रम और शिक्षण सामग्री के विकास करने में
- समस्याओं की पहचान करना और उसका हल निकलना
- बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने में
- समुदाय स्कूल की साझेदारी को बढ़ाने में
- लोकतंत्र को समझाना और उसक अपने समाज के अन्दर उपयोग करना लोगो की जवाबदेही बढ़ाना
- शांति और स्थिरता को सुनिश्चित करना
- घर के माहौल में सुधार लाना

इसके अतिरिक्त समुदाय निम्न कार्यो में भी अपनी भूमिका निभाता है जैसे

- नामांकन और शिक्षा के लाभ को बढ़ाना
- स्कूल स्टाफ का मनोबल बढ़ाना
- छात्रों की नियमित उपस्थिति को सुनिश्चित करना

Training Moduel=PART-I_Edited.qxd 12/16/2013 3:19 PM Page 72

- स्कूल के निर्माण, मरम्मत और सुविधाओं में सुधार
- श्रम, सामग्री, भूमि, और धान में योगदान
- शिक्षकों की भर्ती और समर्थन
- स्कूल स्थानों और कार्यक्रम के बारे में निर्णय लेने के
- शिक्षक उपस्थिति और प्रदर्शन निगरानी और अमल करना
- स्कूलों का प्रबंधान करने के लिए ग्राम शिक्षा समितियों के गठन
- सक्रिय रूप से बच्चों की सीखने की प्रगति और कक्षा व्यवहार के बारे में जानने के लिए स्कूल की बैठकों में भाग लेना
- कौशल शिक्षा और स्थानीय संस्कृति की जानकारी प्रदान करने
- पढ़ाई के साथ बच्चों की मदद करने
- अधिक संसाधनों को जुटाने और शिक्षा के माधयम से समस्याओं को सुलझाने
- बालिका शिक्षा की को बढ़ावा देना
- उनके लिए पर्याप्त आवास तैयार करके अधयापकों के लिए सुरक्षा प्रदान
- शेडूलिंग स्कूल कैलेंडर
- स्कूलों को संचालित करने के लिए बजट
- शैक्षिक समस्याओं / कम नामांकन और छोड़ने वालों की उच्च पुनरावृत्ति के लिए योगदान कारकों की पहचान है उनके संज्ञानात्मक विकास के लिए पर्याप्त पोषण और उत्तेजनाओं के साथ प्रदान करके स्कूली शिक्षा के लिए बच्चों की तत्परता की तैयारी .
- शिक्षा में समुदाय की भागीदारी भी शिक्षकों के लिए एक शक्तिशाली प्रोत्साहन हो सकता है। शिक्षक अनुपस्थिति और समय पर कक्षाओं में दिखाने के लिए समय की पाबंदी के अभाव में कई स्थानों में गंभीर समस्याएं हैं जिनका हल आपसी मेलजोल से ही संभव है।

Training Moduel=PART-I_Edited.qxd 12/16/2013 3:19 PM Page 73

अभियान गीत

आओ मिलकर प्रयास करें,
जीवन में उल्लास भरे।
मुमकिन कर दें हर मुश्किल; कम जीवन का संत्रास करें।

आओ मिलकर प्रयास करें,
जीवन में उल्लास भरे।
हाथ ये मौका आया है, नहीं चूकना है भाई,
शिक्षा है अब द्वार खड़ी इससे खुशियाँ है आई।
अँधकार की रात भुलाकर; सूरज का आभास करें।

आओ मिलकर प्रयास करें,
जीवन में उल्लास भरे।
पढ़ा-लिखा माहौल ढले, बच्चे सब स्कूल चलें,
नहीं कहीं कोई पीड़ा हो, खुशियों के अब फूल खिलें।
जला ज्ञान का दीप राह में शिक्षा का प्रकाश करें।

आओ मिलकर प्रयास करें,
जीवन में उल्लास भरे।
हर संकट हम झेलेंगे, पक्की शिक्षा ले लेंगे,
राह में जो रोड़ा आए उसको दूर धकेलेंगे।
इस प्रयास का फल है मीठा, ऐसा हम विश्वास करें।

– – –

Training Moduel=PART-I_Edited.qxd 12/16/2013 3:19 PM Page 74